सिकंदर का रहस्य की लघु उत्तर कथा

एक

रहस्य का खुलासा

क्रिस्टोफर सी. डॉयल

नेशनल बेस्टसेलिंग लेखक

अनुवादः धीरज कुमार

वैस्टलैंड पब्लिकेशंस लिमिटेड

एक रहस्य का खुलासा

क्रिस्टोफर सी. डॉयल बेहद लोकप्रिय लेखक हैं जो अपने पाठकों को ऐसी चमत्कारी दुनिया में ले जाते हैं, जहां किस्से-कहानियों में छिपे प्राचीन रहस्य, विज्ञान और इतिहास के साथ मिलकर एक अविस्मरणीय कहानी गढ़ देते हैं।

आपका पहला उपन्यास, द महाभारत सीक्रेट, 2013 की 10 सर्वश्रेष्ठ किताबों में शामिल था और रेमंड क्रॉसवर्ड बुक अवॉर्ड, 2014 के लिए नामांकित हुआ था। आपका दूसरा उपन्यास, द महाभारत क्वेस्ट: द अलेक्जेंडर सीक्रेट, अभी भी देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली किताबों में है।

सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली और आईआईएम कलकत्ता के छात्र, क्रिस्टोफर ने आंत्रप्रेन्योर बनने से पहले कॉरपोरेट जगत में एक शानदार करियर देखा है। आप अब कंपनियों को बेहतर ग्रोथ हासिल करने के लिए मदद करते हैं और भारत के अग्रणी सीईओ प्रशिक्षकों में हैं।

क्रिस्टोफर अपनी पत्नी, बेटी और प्यारे कुत्ते के साथ नई दिल्ली में रहते हैं और आपको लिखने, पढ़ने, तैराकी और टेनिस खेलने के साथ-साथ घूमने-फिरने और लोगों से मिलने का शौक है। आप एक संगीतकार भी हैं और संगीत के अपने जुनून को आप अपने क्लासिक रॉक बैंड मिड लाइफ क्राइसिस के जरिए पूरा करते हैं।

क्रिस्टोफर सी. डॉयल की अन्य किताबें

द महाभारत सीक्रेट

द महाभारत क्वेस्ट: द अलेक्ज़ेंडर सीक्रेट

एक रहस्य का खुलासा

क्रिस्टोफर सी. डॉयल

अनुवाद

धीरज कुमार

westland publications ltd
61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal, Chennai 600095
93, I Floor, Sham Lal Road, Daryaganj, New Delhi 110002
www.westlandbooks.in

First published in English as *A Secret Revealed* by westland ltd 2016
First published in Hindi as *Ek Rahasya ka Khulasa* by westland publications ltd, in association with Yatra Books, 2017

Copyright © Christopher C. Doyle 2016

All rights reserved
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

Christopher C. Doyle asserts the moral right to be identified as the author of this work.

ALL RIGHTS RESERVED. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording, or by any information storage and retrieval system, except as may be expressly permitted in writing by the publisher.

ISBN: xxxxxxxxxxxx

DISCLAIMER
This book is work of fiction and all characters in the book are fictional. Any resemblance to real life characters, living or dead, is purely coincidental.

लेखक की टिप्पणी

प्रिय पाठक,

अक्टूबर 2014 में जब द अलेक्ज़ेंडर सीक्रेट प्रकाशित हुई, कई पाठकों ने मुझसे पत्र लिखकर पूछा कि इसकी अगली कड़ी कब जारी होगी। वो उस रहस्यमय शख्स को जानना चाहते थे जिसने विजय को फोन किया था और छह महीने बाद गुड़गांव के स्टारबक्स में उससे मिलना चाहता था।

अक्टूबर 2015 में, मुझे समझ आया कि महाभारत क्वेस्ट सीरीज की दूसरी किताब कम से कम 2016 में ही आ पाएगी। तभी मैंने फैसला किया कि मैं अपने पाठकों को चौंकाने वाला एक उपहार दूंगा: एक मुफ्त ईबुक जो अक्टूबर 2015 में शुरू हुए क्वेस्ट क्लब के जरिए, मेरी वेबसाइट पर उपलब्ध होगी। क्वेस्ट क्लब उन पाठकों का समूह है जो मेरी किताबों को पढ़ने, उनका लुत्फ उठाने और उन पर अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए साथ आए हैं। ये ईबुक छह हिस्सों में प्रकाशित हुई थी; अक्टूबर 2015 से शुरू करके हर महीने एक हिस्सा।

मैं मानता हूं कि मेरे पाठकों को उनके प्रश्नों के उत्तर मिलने ही चाहिए। ए सीक्रेट रिवील्ड वहीं से शुरू होती है जहां पर द अलेक्ज़ेंडर सीक्रेट खत्म होती है, और इसका मकसद कुछ अनुत्तरित प्रश्नों का हल ढूंढना है। ये किताब एक ऐसा रहस्य भी सामने लाती है जो आपको उस रहस्य-रोमांच में ले जाएगा जिसका खुलासा मई में जारी होने वाली मेरी अगली किताब में होगा।

वैसे तो ईबुक मेरी वेबसाइट पर क्वेस्ट क्लब के सदस्यों के लिए मुफ्त थी, और अभी भी है, लेकिन बड़ी तादाद में पाठकों ने मुझे लिखा कि वो ए सीक्रेट रिवील्ड की फिजिकल कॉपी भी पसंद करेंगे।

किताब की हार्ड कॉपियों को मुफ्त देना व्यवहारिक नहीं था, इसलिए मैंने एक अलग रास्ता चुना। दुनिया भर में लेखक विश्व पुस्तक दिवस के मौके पर लघु उपन्यास जारी करते हैं, और मैंने भी उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए लघु उपन्यास जारी करने वाला देश का पहला लेखक बनने का फैसला किया।

आपके हाथ में जो किताब है, वो मेरे इसी फैसले का परिणाम है - वाजिब कीमत में एक लघु उपन्यास, जिसे आप खरीदकर पढ़ सकते हैं अगर आप स्क्रीन के बजाय कागज पर छपे शब्दों को ज्यादा पसंद करते हैं।

क्वेस्ट क्लब के बारे में भी मैं आपको जानकारी दे दूं, अगर आपने अभी तक सदस्य के रूप में रजिस्ट्रेशन नहीं कराया है। सदस्यता मुफ्त है और आपको इस किताब का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण वहां से हासिल कर सकते हैं, बिलकुल मुफ्त। यहां आप क्वेस्ट क्लब के इवेंट में भी शामिल हो सकते हैं - जहां पाठक मेरे साथ ऑनलाइन और ऑफलाइन

बात कर सकते हैं - जो भारत भर में होंगे। आने वाले वर्षों में कई मुफ्त ई-बुक आपको मिलेंगी, साथ ही क्लब के सदस्यों के लिए क्विज, पहेलियों, प्रतिस्पर्धाओं और मेरी आने वाली किताबों के एक्सक्लूसिव प्रिव्यू से भी जुड़ने का मौका मिलेगा। यही नहीं, आप किताब लिखने के दौरान मेरे शोध से भी जुड़ सकते हैं और तस्वीरों, वीडियो और मेरे रिसर्च नोट तक पहुंच बना सकते हैं। मेरी किताबों के पात्रों, स्थानों और घटनाओं के बारे में ज्यादा जानकारी भी हासिल कर सकते हैं। क्वेस्ट क्लब के सभी सदस्यों के लिए ये एक रोमांचक सफर साबित होगा। आप www.christophercdoyle.com/thequest-club पर जाकर मुफ्त में रजिस्टर कर सकते हैं।

इस बीच, आप सभी ए सीक्रेट रिवील्ड (एक रहस्य का खुलासा) का आनंद लें और मुझे बताएं कि आप क्वेस्ट क्लब के बारे में क्या सोचते हैं!

क्रिस्टोफर सी. डॉयल,

3 मार्च 2016

अनुक्रम

भाग 1
1
2
3

भाग 2
4
5

भाग 3
6
7
8
9

भाग 4
10
11
12

भाग 5
13
14
15

भाग 6
16
17

भाग 1

अक्टूबर

1

मुयनक, उज्बेकिस्तान

वान क्लुएक ने फर्श पर पड़े हुए थैलों की तरफ संतोष भरी नजरें डालीं। हर थैले में कुछ उभार थे, जो रह-रहकर एक ओर से दूसरी ओर चले जाते थे, क्योंकि उन थैलों के अंदर कैद सांप बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रहे थे। उनकी गुस्से भरी फुफकार उस छोटे कमरे में गूंज रही थी लेकिन वो इससे चिंतित नहीं था।

ऑर्डर को उसका इनाम मिल चुका था।

उज्बेकिस्तान में ऑर्डर के एजेंट्स को जरूरी निर्देश दे दिए गए थे जब वो लोग यहां आ रहे थे। मुयनक कजाक सीमा पर सबसे नजदीकी हवाई अड्डा था। अकताउ से उसत्युर्त पठार की ओर उड़ान भरने के बाद जरूरी हो गया था कि सीमा पर नजदीकी हवाई अड्डे पर उतरा जाए, अन्यथा हेलीकॉप्टर का ईंधन खत्म होने जा रहा था।

और हेलीकॉप्टर मंगाए गए थे और बहुत जल्दी वो मुयनक में उतरने वाले थे ताकि वान क्लुएक और उसके खजाने को बुखारा पहुंचाया जा सके, जो यहां से नजदीकी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा था। उसका गल्फस्ट्रीम जेट अकताउ से बुखारा के लिए चल चुका था और वो बहुत जल्दी अपने घर की तरफ लौट रहा होगा।

वहां पहुंचने के बाद काफी कुछ किया जाना था। वायरस को अलग किया जाना था, सांपों में से निकाला जाना था। इसके बाद फिर परीक्षण होंगे, प्रयोग होंगे ये पता लगाने के लिए कि वायरस की प्रकृति कैसी है और इनका प्रभाव मानव शरीर पर कैसा होता है। उसे कोई संदेह नहीं था कि वायरस वैसे ही परिणाम देगा जैसी वो उम्मीद कर रहे थे। इस चीज में, खासकर इसके बाद तो कोई संदेह नहीं था जो उसने पिछले कुछ दिनों में देखा था। प्राचीन ग्रंथ झूठ नहीं कहते।

वो खड़ा हुआ और उसने अपना शरीर सीधा किया। ये एक थकाने वाला अभियान था। दुनिया भर में ऑर्डर के जितने भी प्रोजेक्ट चल रहे थे, उनमें ये सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट में एक था। और सैकड़ों सालों के दौरान, ये उन कुछ प्रोजेक्ट में से एक था, जो कामयाब हुए थे।

वान क्लुएक ने इस बारे में सोचा। बाहर के किसी शख्स के लिए ऑर्डर के नाकाम मिशन कोई मतलब नहीं रखते थे। कुछ लोग इसे कमजोरी की निशानी, या नाकामी भी मान सकते हैं। लेकिन वान क्लुएक ऑर्डर के साथ इतने लंबे समय से जुड़ा था कि जानता था कि संगठन की महत्वाकांक्षाएं इन छोटे मिशनों की कामयाबी से कहीं आगे की हैं। उनका काम काफी फैला हुआ था और उनका लक्ष्य इतना ऊंचा था कि इन छोटी नाकामियों से उसपर असर नहीं पड़ता था। लेकिन फिर, उनका अंतिम लक्ष्य हासिल करने के लिए कुछ ही कामयाबियों की जरूरत थी।

एक चीज तो तय थी, उसकी महत्वाकांक्षा पूरी होने वाली थी। ऑर्डर के भीतर उसकी प्रतिष्ठा और हैसियत बहुत जल्दी बढ़ने वाली थी।

वो शिखर की ओर एक और सीढ़ी चढ़ चुका था।

और वो वहां पहुंचेगा।

चाहे जो हो जाए।

ऑकलैंड, न्यूजीलैंड

कैथी रैडफोर्ड अपने कंप्यूटर टर्मिनल पर बैठी थी, उसने अपनी स्क्रीन पर आ रही रिपोर्ट्स को पढ़कर एक गहरी सांस ली। ट्रैकिंग कंपनी में, जिसकी टेक्नोलॉजी उन एयरक्राफ्ट पर निगरानी रखने से जुड़ी थी जो सैटेलाइटों के इरीडियम नेटवर्क का इस्तेमाल करते हैं—पृथ्वी की निचली कक्षा में फैले छियासठ सैटेलाइटों की श्रृंखला—एक टेक असिस्टेंट की उसकी नौकरी कभी-कभी बेहद उबाऊ हो जाती थी।

ऐसा नहीं था कि उसे कंपनी में काम करना पसंद नहीं था; कंपनी नई थी—सिर्फ दस साल पुरानी—और तेजी से आगे बढ़ रही थी, सत्तर से ज्यादा देशों में इसके प्रोडक्ट्स बिक रहे थे। और ये अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करती थी, जो इसकी कामयाबी की वजह थी। लेकिन, यही अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी कैथी के लिए कुछ ज्यादा करने लायक नहीं छोड़ती थी। अब, अगर उसके पास ऐसी योग्यता होती जिससे उसे शोध और विकास का काम मिल जाता तो बात कुछ और होती। प्रोडक्ट डेवलपमेंट या नए प्रोडक्ट की डिजाइन पर काम करने से उसे वो उत्साह मिलता जिसकी उसकी मौजूदा नौकरी में भारी कमी थी।

कैथी अपनी ऊब में हमेशा की तरह डूबी थी, उन चीजों पर दुख कर रही थी जो वो हासिल नहीं कर सकी थी। उसके विचार अब उस नौजवान की तरफ मुड़ गए जिसके साथ उसने दो महीने पहले मिलना-जुलना शुरू किया था। पच्चीस सालों में उसे पहली बार लगा था कि उसे कोई ऐसा शख्स मिला है जो सच में उसकी परवाह करता है। शायद वहां आशा थी...शायद आने वाले समय में कुछ रोमांच था...कैथी स्वयं पर मुस्कुरा दी।

तभी उसके केबिन के बाहर एकाएक शोरगुल ने उसे झटका देकर असलियत की दुनिया में ला दिया। उसने कमरे के बाहर सर्वर बैंक में झांका, जो उसके केबिन की कांच की दीवारों के बाहर हल्की रौशनी में दिख रहा था।

वहां कोई हलचल नहीं थी। लेकिन सर्वर रूम के बाहर क्या हो रहा था? वो आवाज कैसी थी?

उसने दरवाजा खोला और केबिन से बाहर निकली, लंबे कदम भरते हुए वो बाहर के ऑफिस की तरफ जाने लगी।

इसके पहले कि वो दरवाजे तक पहुंचती, वो एक धमाके के साथ खुला और दीवार पर टकरा गया और कमरे में पुरुषों का एक समूह घुस आया, उन्होंने काले कपड़े पहने थे और उनके चेहरे काले स्की मुखौटे से ढके थे।

उनमें से एक ने उसकी बांह पकड़ी और उसे घसीटते हुए वापस उसके केबिन में ले जाकर एक कुर्सी पर पटक दिया।

जब बाकी पुरुष उसके केबिन में धड़धड़ाते हुए आए, वो ये देखकर चौंक गई कि

सभी के पास हथियार थे जो ऑटोमैटिक मशीन गन जैसे दिख रहे थे।

तो यही वो आवाज थी जो उसने सुनी थी। वो बाहर के ऑफिस में गोलियां चला रहे थे। उसके कितने सहकर्मी मारे गए होंगे?

तुरंत ही उसके ऊपर घबराहट हावी हो गई, उसकी सोच जम सी गई और वो जड़ हो गई। आंखें चौड़ी करके उसने सभी पुरुषों की तरफ देखा, जैसे कोई हिरण किसी कार की हेडलाइट के सामने आ जाए, और वो समझ नहीं पा रही थी कि आगे क्या होने वाला है। या वो क्या चाहते हैं।

जिस आदमी ने उसे घसीटा था, उसने कहा, उसकी आवाज मुखौटे की वजह से दबी हुई थी, 'मैं चाहता हूं कि तुम इस मशीन की डाटा फाइल निकालो।' उसने एक हाथ से उसकी तरफ एक कागज का टुकड़ा बढ़ाया, और दूसरे हाथ से उसकी तरफ रिवॉल्वर तान दिया।

धमकी साफ थी।

कांपते हाथों से, कैथी ने कागज लिया और देखा। कुछ सेकंडों के लिए, कागज पर लिखे शब्द और संख्याएं उसे अपनी आंखों के सामने तैरते दिखाई दिए। फिर, वो स्थिर हुए और तब उसे पता चला कि वो एक हेलीकॉप्टर का ब्यौरा पढ़ रही है। ऐसा हेलीकॉप्टर जिसमें ट्रैकिंग सॉफ्टवेयर लगा था।

वो समझ गई कि ये लोग क्या चाहते हैं। वो उन फाइलों की तलाश में थे जिनमें कंपनी के सर्वर पर इस हेलीकॉप्टर की उड़ान के रास्ते से जुड़ी जानकारियां थीं।

लेकिन वो ये नहीं पूछने जा रही थी कि उन्हें ये जानकारियां क्यों चाहिए। उनकी बंदूकें, खासकर वो बंदूक जो उसके माथे की तरफ तनी थी, अपने आप में आगे की कार्रवाई करने के लिए काफी थीं।

वो अपने कंप्यूटर की तरफ मुड़ी और तेजी से वो निर्देश टाइप करने लगी जिससे वो फाइलें सामने आतीं।

कुछ सेकंडों में, फाइलें स्क्रीन पर दिखने लगीं।

'तुम्हें इनका प्रिंटआउट चाहिए?' वो पूछना चाहती थी, लेकिन डर की वजह से उसके मुंह से सिर्फ एक फुसफुसाहट सी निकली।

'नहीं, फाइलों को डिलीट कर दो।' आदेश साफ था।

उसकी उंगलियां कीबोर्ड पर चलते हुए हिचकिचाने लगीं।

कमरे में गोली चलने की आवाज गूंजी और उसकी जांघों से तेज दर्द फूट पड़ा।

उस आदमी ने उसे गोली मार दी थी।

कैथी ने आतंक भरी निगाहों से देखा कि खून से उसकी ड्रेस भीग रही है। उस पर बेहोशी छाने लगी। 'जल्दी करो, अभी।' उस आदमी की आवाज सर्द थी जब उसने अपना आदेश दोबारा दिया।

अपने ऊपर छा रही बेहोशी और अंधेरे से लड़ते हुए, कैथी ने तुरंत फाइलें डिलीट कर दीं। जब उसने अपना काम कर लिया, तब उस आदमी की तरफ देखा। उसकी जांघों का दर्द अब असहनीय हो रहा था। ऐसा दर्द उसे इसके पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था। और गोली मारे जाने का सदमा अब उस पर असर दिखाने लगा था।

'अब सर्वर की सारी फाइलें डिलीट कर दो।'

कैथी इस आदेश पर थोड़ा ठिठक गई। वो अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी और उसके हाथ उस आदमी के आदेश का पालन करने में कांप रहे थे।

उसने उस आदमी की तरफ मुखौटे के चीरे में झांककर देखा। कैथी को उसकी नीली आंखें दिखाई दीं। यही अंतिम चीज थी जो उसने देखी।

एक और गोली चली।

कैथी अपनी कुर्सी में धंस गई, उसके माथे पर सामने की तरफ हुए एक छेद में से खून का फव्वारा निकलने लगा। उसके पीछे से, कुर्सी पर जहां उसका सिर टिका था, दिमाग और हड्डी के टुकड़े और खून धीरे-धीरे नीचे टपक रहे थे।

उस समूह के मुखिया ने अपनी बंदूक को खोल में वापस रखा और एक सदस्य को इशारा किया जो आगे आया और टर्मिनल पर कुछ काम करने लगा। उसकी उंगलियां कीबोर्ड पर कुछ सेकंडों के लिए चलती रहीं। फिर वो सीधा खड़ा हुआ और टर्मिनल की तरफ देखने लगा, जब स्क्रीन पर संख्याएं और अक्षर चमकने लगे और एक प्रोग्रेस बार दिखा।

सारे आदमी केबिन में बिना हिले खड़े रहे। सर्वर रूम के बाहर का दफ्तर डरावने रूप से शांत था। कोई हलचल नहीं हो रही थी।

धीरे-धीरे कई मिनट बीत गए और स्क्रीन पर दिख रहे प्रोग्रेस बार की लंबाई बढ़ने लगी। आखिरकार, एक बीप की आवाज आई और स्क्रीन पर एक मैसेज आया। 'डिलीशन कंपलीट।'

मुखिया ने अपने आदमियों की तरफ चेहरा किया। 'बैक अप्स ढूंढो। उन्हें नष्ट कर दो। फिर इस जगह को जला दो। याद रखना, कोई जीवित ना बचे, कोई गवाह ना बचे।'

जनवरी

2

जौनगढ़ किला

विजय किले के अंदर बने गुप्त कक्ष में बैठा था, उसके चारों तरफ स्टेनलेस स्टील की आलमारियां थीं, जिनमें स्टेनलेस स्टील के डिब्बे थे। जब विजय को इस कमरे का पता चला था तब उसने ये भी ढूंढा था कि इन डिब्बों में माइक्रोफिल्म के रोल्स हैं।

वो अब कमरे में स्टेनलेस स्टील की मेज पर बैठा था और उसने माइक्रोफिल्म रीडर को स्विच ऑन कर दिया था। उसके चेहरे पर दृढ़ निश्चय के भाव थे।

टास्क फोर्स की पिछली बैठक में उसके दिमाग में एक विचार आया था। जब वो लोग ऑर्डर के बारे में बात कर रहे थे, उस रहस्यमय संगठन के बारे में जिसके बारे में दुनिया की किसी खुफिया एजेंसी के पास कोई जानकारी नहीं थी, उसे एक प्राचीन ग्रंथ का एक अंश याद आया था जिसमें इस संगठन की उत्पत्ति का सुराग हो सकता था। ये सुराग उन दस्तावेजों का हिस्सा था जिन्हें महान अशोक के बनाए गुप्त संगठन, नाइन, ने सुरक्षित रखा था।

विजय ने पिछले दो महीने से इस बारे में काफी सोचा था, वो उस जानकारी को जुटाने का जरिया ढूंढ़ रहा था जिससे टास्क फोर्स को अपने दुश्मन को समझने में मदद मिले। अभी तक, वो बस इतना जानते थे कि ये एक प्राचीन संगठन है—दो हजार साल से ज्यादा पुराना—और इसके तार दुनिया भर में फैले हुए हैं। इससे ज्यादा कुछ नहीं।

अंत में उसके दिमाग में एक बात आई थी। अगर ऑर्डर प्राचीन था, तो नाइन भी प्राचीन था। क्या ये मुमकिन हो सकता है कि दोनों के बीच कोई संबंध हो, जिसका जिक्र उनके दस्तावेजों में कहीं हो? यहां, पहाड़ की गहराइयों में बने इस किले में, नहलों के गुप्त पुस्तकालय को माइक्रोफिल्म पर सुरक्षित रखा गया था, जिसका कुछ हिस्सा उसके चाचा ने अंग्रेजी में अनुवाद कर रखा था। उसके अलावा कोई नहीं जानता था कि इस गुप्त कमरे में क्या रखा है। ये उसके चाचा की विरासत थी।

विजय के लिए, स्पष्ट तौर पर इसी जगह से शुरुआत करना बनता था। कौन जानता है कि इन दस्तावेजों में क्या छिपा है? शायद ऑर्डर की पहचान और उसकी महत्वाकांक्षों के बारे में ज्यादा सुराग?

जहां डॉक्टर शुक्ला को ऑर्डर की पहचान के बारे में किसी भी सुराग का पता लगाने के लिए भारत की समृद्ध पौराणिक कथाओं को छानने की जिम्मेदारी मिली थी—टास्क फोर्स को अब तक के अनुभव से महसूस हुआ था कि इस पहलू की जांच अच्छे तरीके से किए जाने की जरूरत है—विजय ने फैसला किया था कि वो माइक्रोफिल्म के दस्तावेजों की अच्छे से जांच-परख करेगा।

वो जानता था कि इसमें वक्त लगेगा। लेकिन उसने खुद से, और डॉक्टर शुक्ला से, वादा किया था कि वो उन लोगों को ढूंढ़ निकालेगा जिन्होंने उसकी मंगेतर और शुक्ला की बेटी, राधा की जान ली है, और उसके शरीर तक पहुंचकर रहेगा। ये वादा जज्बात भरे एक पल में किया गया था लेकिन वो इसे पूरा करने के लिए दृढ़ था। और उसे इस

चीज की परवाह नहीं थी कि इसमें कितना वक्त लगता है।

वो तब तक कोशिश करेगा जब तक वो वहां पहुंच नहीं जाए।

मार्च

3

गुड़गांव

विजय ने अपने हाथ जेब में रखे हुए थे, और वो अपनी घबराहट छिपाने की कोशिश कर रहा था, जब वो उस युवती के पीछे जा रहा था जो उसे मुलाकात के लिए ले जा रही थी। उसे पता नहीं था कि वो ऐसा क्यों कर रहा था। वो ये भी नहीं जानता था कि वो क्या कहने वाला था। वो यहां बस अपने अंतर्मन की आवाज पर आया था, बिना पहले से मुलाकात का समय तय करके। और, उसे तब बहुत आश्चर्य हुआ था, जब वो आदमी उससे पांच मिनट की मुलाकात के लिए तैयार हो गया था, जिससे वो मिलना चाहता था। लिफ्ट में युवती ने इस बारे में बिलकुल साफ-साफ बता दिया था।

उसे एक बड़े कॉन्फ्रेंस रूम में ले जाया गया जिसमें महोगनी की मेज थी और चमड़े की काली कुर्सियां। कमरे के दोनों छोर पर दो बड़ी टेलीविजन स्क्रीन थीं जिन पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के लिए कैमरे लगे थे।

'डॉक्टर सक्सेना आपके पास एक मिनट में आ जाएंगे,' युवती ने जाते-जाते मुस्कुराकर ये बात कही थी।

विजय दरवाजे की ओर चेहरा किए खड़ा रहा, उसका दिमाग सुन्न सा था। पिछले चार महीनों से, उसने उस आदमी के लिए अपने मन में गुस्सा पाल रखा था, जिसे वो पक्के तौर पर राधा की मौत का जिम्मेदार मानता था। वो सक्सेना की तलाश में जाना चाहता था लेकिन पैटरसन ने साफ कर दिया था कि बिना किसी ठोस सुबूत के उस आदमी को छुआ नहीं जाएगा।

और उनके पास कोई सुबूत नहीं था।

बिल पैटरसन इंडो-अमेरिकन टास्क फोर्स का मुखिया था जिसे डेढ़ साल पहले तकनीक आधारित आतंकवाद के मामलों पर निगरानी रखने और जांच करने के लिए मुखिया बनाया गया था। दोहरी पीएचडी डिग्री हासिल कर चुका ये पूर्व अमेरिकी नेवी सील टास्क फोर्स को सख्ती से चलाता था। किसी तरह की सहानुभूति उसने एक बार तब दिखाई थी जब राधा की मौत के बाद उसने विजय से संक्षिप्त बातचीत की थी। इराक और अफगानिस्तान की लड़ाई का अनुभव रखने वाला ये शख्स तभी नरमी दिखाता था जब परिस्थितियां इसकी मांग करती हों। और ऐसे मौके काफी कम ही आते थे।

लेकिन सक्सेना पर ध्यान नहीं देने और ऑर्डर के खिलाफ सुबूत जुटाने के पैटरसन के निर्देशों का विजय पर ज्यादा असर नहीं पड़ा था। वो पक्के तौर पर मानता था कि राधा की हत्या में सक्सेना का हाथ था। चार महीने तक, उसने स्वयं को रोके रखा था, सक्सेना से भिड़ने की अपने मन की इच्छा पर काबू पा रखा था। उसकी आदत थी चुनौतियों से आमने-सामने भिड़ने की, भले ही उससे निपटने की योजना तैयार ना हो।

और अभी भी उसके पास कोई योजना नहीं थी। खुद को रोक पाने में असमर्थ

होकर, उसने अपने मन की आवाज सुनी थी और अब वो सक्सेना के दफ्तर में था बिना इस बात पर सोचे कि वो क्या कहेगा या क्या करेगा।

दरवाजा खुला और सक्सेना अंदर आया। टाइटन फार्मास्युटिकल्स का चीफ मेडिकल ऑफिसर लंबा और दुबला-पतला शख्स था जिसके बाल काले-सफेद थे, उसका कद विजय से एकाध इंच ज्यादा था।

काफी देर तक दोनों ही एक-दूसरे को सावधानीपूर्वक देखते रहे। सक्सेना ने ही चुप्पी तोड़ी।

'विजय सिंह,' उसने धीरे से कहा, जैसे कि वो उसका नाम याद करने की कोशिश कर रहा हो। 'मैं जानता हूं कि तुम कौन हो।'

'आप जानते हैं?' विजय चौंक पड़ा था। वो सक्सेना से कभी नहीं मिला था।

सक्सेना ने हामी भरते हुए सिर हिलाया और एक कुर्सी खींची। उसने विजय को बैठने का इशारा किया।

'तुम मुझे कैसे जानते हो?' विजय अभी भी खड़ा था। वो खुद को धिक्कारता अगर वो उस काम को करता जो सक्सेना चाहता था, चाहे वो काम शिष्टाचार का ही क्यों ना हो।

सक्सेना मुस्कुराया, विजय का गुस्सा भड़कने लगा। सक्सेना विजय के खड़े रहने के फैसले को नजरअंदाज करके कुर्सी में आराम से बैठ गया।

'तुम उस महिला के मंगेतर हो जो मुझसे न्यूज रिपोर्टर के वेश में मिलने आई थी।'

विजय समझ नहीं पाया कि वो इस पर क्या प्रतिक्रिया दे। ये सच था कि राधा ने न्यूज रिपोर्टर बनकर सक्सेना से मुलाकात की थी।

'चाय या कॉफी? या सॉफ्ट ड्रिंक?' सक्सेना ने नरम लहजे में पूछा। वो दिखाना नहीं चाहता था कि उसके दफ्तर में विजय की उपस्थिति से वो घबराया हुआ है। उसके व्यवहार से विजय असमंजस में पड़ गया। ऐसा लग रहा था जैसे वो इस मुलाकात की प्रतीक्षा कर रहा था, लेकिन साथ ही उसकी आवाज या हाव-भाव में इसका कोई आभास नहीं था। वो बातचीत को लेकर बेहद उदासीन सा लग रहा था।

विजय को महसूस हुआ कि उसकी मुट्ठियां भिंचने लगी हैं। उसने खुद को शांत रखने की कोशिश की। सक्सेना की बेपरवाही उसे गुस्सा दिला रही थी। 'और तुमसे मुलाकात के बाद उसका अपहरण करके हत्या कर दी गई थी,' वो गुस्से में बोला।

सक्सेना का चेहरा गंभीर हो गया। 'हां, हां,' उसने कॉन्फ्रेंस टेबल पर कलम ठोकते हुए कहा। 'मैंने उस बारे में सुना। बहुत अफसोस हुआ।' उसने विजय की तरफ देखा। 'लेकिन तुम यहां यही बताने तो नहीं आए थे जो मैं पहले से जानता था। मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?'

विजय हिचकिचाया। इस आदमी के लिए उसके मन में इतना गुस्सा भरा था, जिसे वो राधा की मौत का पक्के तौर पर जिम्मेदार मानता था, कि वो उससे बात नहीं करना चाहता था। फिर भी, वो जानता था कि उसे सावधानी दिखानी होगी, क्योंकि वो टास्क फोर्स के मिशन को खतरे में नहीं डालना चाहता था। विजय को सावधानी से कदम रखने होंगे।

दांव-पेंच विजय की ताकत नहीं थे। वो सीधी बात करना पसंद करता था। वो इस बात पर यकीन करता था कि आप अपनी चाल चल दो और फिर देखो कि खेल में आप

कहां खड़े हो, बनिस्पत इसके कि जीतने के लिए हर तरह के दांव-पेंच का इस्तेमाल किया जाए। उसने फैसला किया कि वो सक्सेना से सीधी बात करेगा। 'तुम्हारे साथ मुलाकात में कुछ हुआ था,' विजय ने हर शब्द पर जोर देते हुए अपनी बात कहनी शुरू की। 'मैं नहीं जानता क्या, लेकिन मेरा इरादा वो जानने का है। तुमसे उसकी मुलाकात और उसकी मौत के बीच रिश्ते की जांच-पड़ताल के लिए मैं अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल करूंगा। और जब मैं ये काम कर लूंगा, मैं ये सुनिश्चित करूंगा कि उसकी मौत के जिम्मेदार लोगों को सजा मिले।'

सक्सेना उसे कुछ पलों तक घूरता रहा। फिर उसने कहा। 'तुम्हारा इरादा प्रशंसनीय है,' उसने सपाट स्वर में कहा। 'और मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं।'

उसने ऐसे लहजे में कहा जैसे वो विजय पर कोई अहसान कर रहा हो।

'हमारी मुलाकात में कुछ नहीं हुआ था। उसने मुझसे एक प्रयोगशाला में कुछ लाशों के बारे में सवाल पूछा था जिसे हमने क्लीनिकल ट्रायल के लिए आउटसोर्स कर रखा था। मैंने उसे बताया था कि हमें वहां चल रही गतिविधियों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। बस इंटरव्यू यहीं खत्म हो गया था। उसके बाद वो चली गई थी। मैंने उसे दोबारा नहीं देखा।' विजय ने उसकी बातें सुनीं।

उसे ऐसा लग रहा था कि सक्सेना साफ-साफ झूठ बोल रहा था।

'मुझे तुम पर विश्वास नहीं है,' उसने सक्सेना से कहा। 'मेरा मानना है कि उस मुलाकात में कुछ तो हुआ था। मैं राधा को जानता हूं। वो तुमसे किसी कारण से मिलने आई थी और उसने सुनिश्चित किया होगा कि वो उस मकसद को पूरा करने की हरसंभव कोशिश करे,' विजय गुस्से में गरजा जबकि सक्सेना उसे उदासीन निगाहों से देखता रहा।

'मुझे मालूम है कि उसकी बातें सुनकर तुम डर गए थे। और मुझे पूरा यकीन है कि इसके बाद उसके गायब होने में तुम्हारा हाथ था। अगर तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारा झूठ स्वीकार कर लूंगा और मान लूंगा कि ये सब संयोग मात्र है, तो तुम गलती कर रहे हो,' उसने कड़े लहजे में अपनी बात खत्म की।

कमरे में सन्नाटा छा गया। सक्सेना का चेहरा सख्त हो गया था। विजय के शब्दों में सच्चाई थी जिसे वो स्वीकार नहीं कर सकता था और इस बात से वो चिढ़ गया था। उसके दिमाग में एक और बात आई। एक अकेला शख्स, जो एक आम आदमी है—बिना किसी राजनीतिक या आर्थिक ताकत के—कैसे उसके दफ्तर में आकर उससे खुलेआम भिड़ सकता था?

वो खड़ा हो गया। 'ये मुलाकात खत्म होती है,' उसने कहा और कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ गया।

विजय हार मानने वाला नहीं था। वो जानता था कि उसने सही नब्ज पकड़ ली है। और वो अपने फायदे के लिए इसे और दबाना चाहता था।

'तुम जान गए हो कि तुम इस मामले में फंसोगे,' उसने सक्सेना को कहा। 'अगर तुम इसमें शामिल हो, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। मैं सुनिश्चित करूंगा कि तुम्हें वो सजा मिले जिसके तुम भागी हो।'

सक्सेना एड़ियों पर घूम गया, साफ तौर पर वो गुस्से में था। 'सच में?' उसने पूछा। 'तुम क्या करोगे? इस संदेह में मुझे जान से मार दोगे कि राधा की हत्या में मेरा

हाथ था?’ उसकी आंखें विजय के चेहरे पर धंस गईं। ‘जाओ,’ उसने चुनौती दी, ‘जो करना है कर लो। देखते हैं तुम कहां तक पहुंचते हो।’

वो कमरे से बाहर निकल गया।

विजय उसे जाते हुए देखता रहा। उसके हाथ उन जज्बातों से कांप रहे थे जो उसके मन में उठ रहे थे।

तभी, उसे चौंकाते हुए, दरवाजा वापस खुला और सक्सेना कमरे में फिर से आया। उसके चेहरे पर उपहास के भाव थे।

‘और हां, विजय, अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं घूम-घूमकर लोगों पर अपनी मंगेतर की हत्या का आरोप नहीं लगाता। तुम्हें पता भी नहीं कि आसपास क्या-क्या हो रहा है। मैं तुम्हें एक दोस्त की तरह यही सलाह दूंगा कि जो जैसा है, उसे वैसा ही रहने दो।’

भाग 2

मार्च

4

जौनगढ़ किला

विजय ने बीयर का अंतिम घूंट लिया और खाली बोतल को देखने लगा। उसके मन में बवंडर चल रहा था—विचार और भावनाएं उथल-पुथल मचा रही थीं। सक्सेना के साथ उसकी मुलाकात वैसी नहीं रही थी जैसा उसने सोचा था। सच पूछो तो, उसे डर था कि इससे सक्सेना और सावधान हो गया होगा।

और उसे सक्सेना के वो शब्द याद आ रहे थे जो उसने जाते-जाते कहे थे। टाइटन का वो चीफ मेडिकल ऑफिसर अपने गूढ़ बयान के बाद कमरे से बाहर चला गया था, और विजय को हैरानी की हालत में छोड़ गया था।

सक्सेना के कहने का मतलब क्या था?

एक तरफ उसे इस बात का पक्का यकीन था कि राधा की मौत में सक्सेना शामिल है, लेकिन वो ऑर्डर के साथ उसके संबंध को लेकर कुछ निश्चय नहीं कर पा रहा था। सक्सेना की जानकारी वायरस की प्रकृति और उसके प्रभावों को समझने में निश्चित रूप से ऑर्डर के लिए उपयोगी होगी। विजय करीब-करीब पक्के तौर पर मान चुका था कि सक्सेना उस वायरस के अध्ययन और विश्लेषण के काम में शामिल होगा, जो अब ऑर्डर के कब्जे में था। लेकिन क्या वो एक भाड़े के आदमी से ज्यादा की हैसियत रखता था जिसे ऑर्डर ने वायरस से जुड़े विज्ञान की जानकारी की वजह से रखा था? या सक्सेना, वान क्लुएक की तरह ऑर्डर का सदस्य था?

अंतिम विचार ने विजय का ध्यान परेशान करने वाली इस सच्चाई की तरफ मोड़ दिया, जो उसका पीछा कजाखस्तान से ही कर रही थी।

टास्क फोर्स ऑर्डर को वायरस ले जाने से रोकने में नाकाम रही थी। विजय जानता था कि पैटरसन और इमरान ऑर्डर का सुराग ढूंढने की कोशिश कर रहे थे; ये जानने की कोशिश में थे कि वान क्लुएक वायरस के नमूनों को कहां ले गया था। लड़ाई तो वो हार गए थे लेकिन युद्ध अभी शुरू हुआ था। टास्क फोर्स का अंतिम मकसद ऑर्डर को नष्ट करना था। इस पुराने संगठन की साजिशों से दुनिया को सुरक्षित रखने का यही इकलौता उपाय था। सैकड़ों वर्षों से, वो दुनिया को गुलाम बनाने की योजना बना रहे थे। और अब, तकनीकी उन्नति की मदद से, वो अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए सबसे करीब पहुंच चुके थे।

विजय ने अपनी स्टडी रूम की बड़ी खिड़की से बाहर झांका, जहां किले को चारों तरफ से घेरे हुए अंधेरे में डूबे गांव दिख रहे थे। वो उठा और स्टडी रूम में रखे छोटे रेफ्रिजरेटर से एक और बीयर निकाली, और परिस्थितियों पर फिर से विचार करने लगा।

सक्सेना के शब्दों ने किसी अपशकुन का संकेत दिया था। ऐसा लगता था कि पैटरसन को भी किसी मुश्किल की आशंका थी। पिछले कुछ महीनों के दौरान, इस बात

के लिए जोरदार कोशिशें हो रही थीं कि टास्क फोर्स को कुछ विशेषज्ञों के समूह से बदलकर ऑर्डर, और तकनीक आधारित आतंकवाद से मुकाबला करने वाला एक बड़ा गुप्त संगठन बना दिया जाए। पैटरसन जैसा संगठन बनाना चाहता था उसमें और विशेषज्ञों को शामिल किया जाता, दुनिया भर में संदेहास्पद परिस्थितियों की जांच-पड़ताल के लिए अपने संसाधन होते, और उन रहस्यों की जांच की जाती जो नियमित पुलिस बलों के लिए किसी मतलब के नहीं होते हैं। उनके अनुभवों ने दिखाया था कि छोटी-छोटी असंगतियां भी बड़ी साजिशों के लक्षण हो सकती हैं।

पैटरसन की योजना कामयाब हुई थी। नए संगठन के समर्थन में और देशों की सरकारों को जोड़ा गया था, जिसे अभी तक कोई कोड नेम नहीं दिया गया था। वैसे तो ये संयुक्त रूप से इंडो-यूएस की मुहिम रहेगा, नया संगठन उन देशों से संसाधन ले सकेगा जिन्होंने इसे समर्थन देने के लिए दस्तखत किए थे।

लेकिन चीजें विजय की उम्मीद के मुताबिक नहीं चल रही थीं। राधा का शरीर अभी तक नहीं मिल सका था। वो राधा को ढूंढ़ने की धीमी गति पर नाराज था। और उसने शुक्ला से वादा किया था कि वो राधा का शरीर ढूंढ़ेगा और वापस लाएगा। यही एक चीज थी जो उनके मन को शांति दे सकती थी।

तब तक, वो जानता था कि नींद भी बड़ी मुश्किल से आनी थी। वो तब तक आराम नहीं कर सकता था जब तक सच का पता नहीं लगा लेता।

बस एक दिक्कत थी।

उसे पता नहीं था कि शुरुआत कहां से करे।

5

इंटेलिजेंस ब्यूरो हेडक्वॉर्टर्स, नई दिल्ली

विजय कॉन्फ्रेंस टेबल की चिकनी, पॉलिश की हुई सतह पर नजरें टिकाए था, जब पैटरसन बोल रहा था। वीडियो कॉन्फ्रेंस में माहौल सहज नहीं रहा था।

इमरान ने पिछली रात विजय से संपर्क किया था, और उसे जानकारी दी थी कि पैटरसन उन दोनों से एक साथ बात करना चाहता है। तुरंत। उन्होंने अपने काम में सुबह सबसे पहले इसी कॉल को तय किया था, ताकि अमेरिका में पैटरसन का दिन खत्म होने के पहले मुलाकात हो जाए।

'तुम टाइटन गए थे।' पैटरसन के शुरुआती शब्द सर्द और सपाट लहजे में कहे गए थे।

विजय, जो इस बात से आश्चर्य में था कि कितनी जल्दी पैटरसन को सक्सेना से उसकी मुलाकात का पता चल गया था, बिना कुछ कहे सिर्फ सिर हिला सका। उसके पास आने वाली चीज की तैयारी के लिए कोई वक्त नहीं था।

'तुम जानते हो कि हमारा टाइटन जाना वर्जित है,' पैटरसन ने अपनी बात जारी रखी थी। 'मुझे कुर्त वॉलेस की तरफ से आधिकारिक शिकायत मिली है कि तुम टाइटन के गुड़गांव ऑफिस गए थे और तुमने टाइटन के चीफ मेडिकल ऑफिसर को डराया-धमकाया है। डॉक्टर सक्सेना तुम्हारे खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज करना चाहता था लेकिन वॉलेस ने उसे मना किया और कहा कि वो मुझसे इस बारे में बात करेगा।'

विजय जानता था कि वॉलेस को इस बात की जानकारी है कि पैटरसन और उसकी टीम नई दिल्ली में पिछले साल टाइटन के साथ जुड़ी प्रयोगशाला में लाशों के मिलने के मामले में आईबी के साथ जांच-पड़ताल कर रही है। पैटरसन के माध्यम से, वॉलेस को जयपुर में इमरान की उस खोज के बारे में भी जानकारी थी जिसमें एक मेडिकल सेंटर की हाई-टेक जेल में दो सौ से ज्यादा लोग मिले थे—जिन पर ऑर्डर सालों से अपने प्रयोग कर रहा था। वॉलेस को उसी मेडिकल सेंटर में राधा की मौत के बारे में भी जानकारी दी गई थी।

हालांकि वॉलेस को टास्क फोर्स या इसके मुखिया के रूप में पैटरसन की भूमिका की जानकारी नहीं थी। सक्सेना, जो अभी टास्क फोर्स के अस्तित्व से अनजान था, ने माना होगा कि विजय उस महिला के नाराज मंगेतर के रूप में उससे मिलने आया था जो जयपुर के पास टाइटन मेडिकल सेंटर में मारी गई थी। ये स्वाभाविक था कि वॉलेस ने पैटरसन के पास शिकायत दर्ज कराने की सोची थी, क्योंकि शायद वो अमेरिका में इकलौता शख्स था जो विजय को जानता था।

विजय ने विरोध दर्ज कराने के लिए अपना मुंह खोला। उसने शारीरिक रूप से सक्सेना को नहीं डराया था, हालांकि उसने स्वीकार किया कि उसने उसे धमकी दी थी।

लेकिन पैटरसन ने फिर कहा था।

‘मेरा मानना है कि हम इस बारे में साफ-साफ बात कर चुके थे,’ टास्क फोर्स के इस मुखिया का लहजा सख्त था। ‘टास्क फोर्स में अंतिम फैसला तुम्हारा नहीं होता। मेरा होता है। तुम्हें मेरे साथ इस बारे में चर्चा किए बगैर वहां नहीं जाना चाहिए था। मैंने तुम्हें पहले भी इस बारे में बताया है—ये तुम्हारी निजी लड़ाई नहीं है जिसे तुम लड़ रहे हो। राधा मर चुकी है और तुम उसे बदल नहीं सकते। किसी भी परिस्थिति में हम टास्क फोर्स को मुसीबत में नहीं डाल सकते। लेकिन अगर तुम अपनी ही छोटी-छोटी चालें चलते रहोगे तो ऐसी ही चीजें होंगी। और मैं ना तो इसका समर्थन करूंगा और ना ही इसकी अनुमति दूंगा। हमारे ऊपर एक जिम्मेदारी है। और अगर तुम उस जिम्मेदारी को पूरा नहीं कर सकते तो तुम टास्क फोर्स के मेंबर होने के लायक नहीं हो। किस्मत के सहारे जोखिम मत लो, लड़के।’

विजय ने चुपचाप सिर हिला दिया। पैटरसन ने उसे बोलने का मौका नहीं दिया था। ऐसा नहीं था कि इससे कोई फायदा होता। वो जानता था कि पैटरसन सच कह रहा है। लेकिन वो क्या कर सकता था? अगर उसने सक्सेना से मिलने के पहले पैटरसन से सलाह-मश्विरा किया होता, ये पूर्व नेवी सील निस्संदेह उसे मना ही करता।

‘मुझे माफ कर दें,’ विजय बुदबुदाया था, उसे ऐसा लग रहा था जैसे किसी स्कूली बच्चे को डांट पड़ी हो। ‘ऐसा दोबारा नहीं होगा। मैं ये पक्का करूंगा।’

‘बढ़िया है,’ पैटरसन ने जवाब दिया। ‘क्योंकि हम इस बात का पता लगाने में जुटे हैं कि ऑर्डर का ठिकाना कहां है और हम नहीं चाहते कि तुम अपने निजी प्रतिशोध या एजेंडा की वजह से चीजों को गड़बड़ कर दो।’ उसने इमरान की तरफ देखा। ‘तुम उसे अब बाकी की बातें बता सकते हो। तुमसे बाद में बात करता हूं।’

स्क्रीन काली हो गई।

कॉल खत्म हो चुकी थी।

इमरान ने विजय की तरफ देखा। ‘मैं तुम्हें उस बारे में कुछ नहीं कहूंगा जो तुमने टाइटन में किया,’ उसने कहा। ‘मेरे विचार से पैटरसन ने सब कुछ कह दिया है।’ वो पल भर रुका। ‘लेकिन मेरे पास तुम्हें बताने के लिए कुछ खबरें हैं। हमें एक सुराग मिला है।’

विजय ने उसकी तरफ सवालिया नजरों से देखा।

‘हमने इस पर चार महीने काम किया है और पैटरसन ने वॉशिंगटन में इसे मुमकिन करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। इसलिए तुम्हें उसका शुक्रगुजार होना चाहिए।’

विजय को ऐसा लगा कि उसके भीतर उम्मीद की लहरें दौड़ गईं। ‘तुम्हारे कहने का मतलब है कि तुम जानते हो कि वो लोग राधा को कहां ले गए हैं?’

‘हम उम्मीद कर रहे हैं। पहले तो हमने ये जानने की कोशिश की कि क्या उस दिन जयपुर एयरपोर्ट से कोई हेलीकॉप्टर उड़ा या वहां उतरा तो नहीं था, जिस दिन राधा को गोली लगी थी। लेकिन हमें उससे कोई फायदा नहीं हुआ। उस दिन सामान्य उड़ानें ही आई-गई थीं। लेकिन कोई हेलीकॉप्टर नहीं था।’

‘ये तो तब जब हम मान रहे थे कि उन्होंने हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल किया,’ विजय ने दलील दी।

इमरान ने अपना सिर हिलाया। ‘ये स्वाभाविक ही लगता है कि उन्होंने राधा को

वहां से बाहर निकालने के लिए हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल किया होगा—इसके अलावा वहां से बाहर निकलने के लिए और कोई तरीका नहीं हो सकता था। हम राधा का ईमेल मुझे मिलने के एक घंटे के भीतर सारे रास्तों पर निगरानी कर रहे थे। और हम मुश्किल से नब्बे मिनट के बाद जयपुर में थे। मेरे उसका ईमेल पढ़ने और जयपुर में हमारे पहुंचने के बीच तीन घंटे से भी कम समय बीता था। और राधा को ईमेल भेजने के थोड़ी देर बाद गोली मारी गई थी—वीडियो पर दिख रहा समय भी इसका सुबूत है। फिर भी, जब हम पहुंचे, सर्वर साफ कर दिए गए थे, सिक्योरिटी कैमरों के हार्ड डिस्क की रिकॉर्डिंग मिटा दी गई थी और मेडिकल सेंटर खाली कर दिया गया था। वहां सिर्फ मरीज थे। उन्हें भागने की व्यवस्था करने में थोड़ा समय तो लगा होगा, जब तक कि उन्होंने इसकी योजना पहले से ना बना रखी हो। मेरा अनुमान है कि उन्होंने योजना नहीं बनाई होगी। अगर वो सड़क के रास्ते से भागे होते तो निश्चित रूप से हमारी नजर में आ जाते। इसलिए हेलीकॉप्टर ही एकमात्र रास्ता बचता था।'

'रडार से पता किया क्या?' विजय ने पूछा।

'हमने जयपुर एयरपोर्ट से पता किया था लेकिन उनके रडार पर कोई हेलीकॉप्टर नहीं दिखा था। इसका मतलब है कि या तो वो रडार के नीचे से उड़ रहे होंगे या पायलट ने ट्रांसपॉन्डर स्विच ऑफ कर दिया होगा। फिर हमने सभी सैटेलाइटों का पता लगाया जिनकी नजर में हेलीकॉप्टर आया हो सकता था। लेकिन कुछ भी काम नहीं आ रहा था। समस्या ये है कि कोई नहीं जानता कि ऊपर कितने सैटेलाइट हैं और वो किनके हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए रूसी और चीनी लोगों ने मदद करने से इनकार कर दिया। हमने सीआईए से भी बात की, लेकिन वो भी जुबान बंद करके बैठे रहे। जब सब कुछ अच्छा हो तो भी सीआईए से उनके सैटेलाइटों की जानकारी लेना मुश्किल होता है, और अभी तो सब कुछ अच्छा भी नहीं है। हमें लग रहा था कि हमारे लिए रास्ते बंद हो चुके हैं। तभी, हमारी किस्मत ने साथ दिया। हमें एक रिपोर्ट मिली जो चार महीने पहले हुए एक सामूहिक हत्याकांड की थी जो ट्रैकिंग कंपनी नामक एक कंपनी के ऑफिस में हुआ था। ये ऐसे प्रोडक्ट बेचती है जो सैटेलाइटों के इस्तेमाल से एयरक्राफ्ट पर निगरानी रखने में मदद करते हैं। ऑकलैंड के ऑफिस में मौजूद सभी लोग मार दिए गए थे। बिल्डिंग को जलाकर राख कर दिया गया था और उनके सर्वर साफ कर दिए गए थे। डाटा सेंटर की इंचार्ज को माथे में गोली मारी गई थी। शायद उन्होंने उस पर दबाव डालकर सारी फाइलों को बाहर निकलवा लिया होगा।'

'ऑर्डर,' विजय बुदबुदाया। 'और तुम्हें अंदेशा है कि इसका संबंध जयपुर के हेलीकॉप्टर से था?'

इमरान ने हामी भरी। 'केवल दो संभावनाएं थीं। या तो ये जयपुर के हेलीकॉप्टर से जुड़ा था या फिर उज्बेकिस्तान के हेलीकॉप्टरों से—जिनमें अमृत था। हम पक्का नहीं बता सकते क्योंकि डाटा फाइलें मिटा दी गई थीं। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। कोई इस बात की कोशिश कर रहा था कि उनके हेलीकॉप्टर की निगरानी नहीं हो सके। इससे हमें सीआईए से मदद लेने का बहाना मिल गया। पैटरसन ने अपनी पूरी ताकत लगाते हुए सीआईए की उन सैटेलाइटों से डाटा फाइलें निकलवा लीं, जो भारतीय उपमहाद्वीप की निगरानी करते हैं। और, हमें कामयाबी मिली, कम से कम तुम्हारे नजरिये से। ये हेलीकॉप्टर जयपुर का था, उज्बेकिस्तान का नहीं। सैटेलाइट से मिले आंकड़ों का इस्तेमाल करके, हमें इरीडियम नेटवर्क से ट्रैकिंग डाटा निकालने में मदद

मिली और हम हेलीकॉप्टर के गंतव्य स्थल तक पहुंच गए। तो, भले ही हमें इस बात का कोई सुराग नहीं मिला कि वान क्लुएक और उसके आदमी उज्बेकिस्तान में उतरने के बाद कहां गायब हो गए, हमें पता चल गया है कि जयपुर से वो हेलीकॉप्टर दिल्ली उतरा था।'

'बस इतना ही? इससे बहुत ज्यादा मदद नहीं मिलेगी,' विजय ने कहा, वो निराश दिख रहा था। भले ही उन्होंने हेलीकॉप्टर का पीछा कर लिया हो, लेकिन उसमें बैठे लोगों का पता लगाने का कोई तरीका नहीं था, एक बार जब वो उससे उतर गए हों।

'हम लोग इसी पर काम कर रहे हैं,' इमरान ने कहा, उसकी आवाज में अभी भी उम्मीद थी। 'हम सभी संभावनाओं की जांच कर रहे हैं। दिल्ली में उनके उतरने के बाद अगले एक घंटे में सभी वाणिज्यिक उड़ानों के दस्तावेजों को छान रहे हैं। उस वक्त के आसपास उड़ान भरने वाले सभी प्राइवेट जेट की जांच कर रहे हैं। और, अगर वो अभी भी दिल्ली में हैं, तो हम सभी सीसीटीवी कैमरों के रिकॉर्ड जांच रहे हैं ताकि हम कहीं से भी उनका पता लगा सकें। ये मुश्किल नहीं होना चाहिए—वो लोग उसे स्ट्रेचर पर ले गए होंगे। बस थोड़ा समय लगेगा। हम उनका पता लगा लेंगे।'

छह घंटे बाद
जौनगढ़ किला

विजय को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। इमरान ने अभी-अभी फोन करके उसे एक सांस में ताजातरीन जानकारी दी थी।

'हम उनके काफी करीब पहुंच चुके हैं,' इमरान ने कहा था। 'हमने इमिग्रेशन रिकॉर्ड की जांच की, कहीं वो देश छोड़कर ना भाग गए हों। और हमें पता चला कि दिल्ली में हेलीकॉप्टर के उतरने के घंटे भर में डॉक्टर सक्सेना तीन और आदमियों के साथ प्राइवेट जेट से बाहर गया था। और पता है क्या? उनके साथ एक महिला मरीज थी। लेकिन मरीज के पासपोर्ट पर नाम राधा नहीं था। और यहां एक बात है जो दिलचस्प है। बाकी के तीन आदमी टाइटन फार्मास्युटिकल्स के कर्मचारी नहीं थे। हम पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि वो कौन थे।'

'तो सक्सेना इसमें शामिल था,' विजय ने पूछा।

'हम पक्के तौर पर नहीं कह सकते,' इमरान ने जवाब दिया। 'ये संभव है कि तथाकथित मरीज राधा थी और उन्होंने नकली पासपोर्ट का इस्तेमाल किया था। लेकिन ये भी हो सकता है कि वो सच में कोई मरीज हो जिसके साथ डॉक्टर सक्सेना उड़ान भर रहा था। हम इस बारे में बेहतर बता पाएंगे जब हमें बाकी तीन आदमियों की पहचान पता चलेगी और हमें उनकी पृष्ठभूमि और काम-धंधे के बारे में ज्यादा जानकारी मिलेगी। लेकिन अगर सक्सेना इसमें शामिल है, हम अब जानते हैं कि वो कहां गए थे।'

'और वो राधा को वहीं ले गए थे।' विजय की आंखें चमकने लगी थीं हालांकि उनमें आंसू और उत्तेजना दोनों शामिल थीं।

'मुमकिन है।' इमरान के लहजे में अनिश्चितता थी। 'हालांकि, इसका मतलब ये

नहीं है कि हम वहां उसका शरीर ढूंढ़ पाएंगे। वो लोग उसे कहीं और ले गए होंगे। लेकिन कम से कम हमारे पास तलाश करने के लिए एक जगह तो है।'

'कहां है ये?' विजय ने पूछा।

इमरान ने उसे बता दिया।

भाग 3

अप्रैल

6

स्टारबक्स, साइबर हब, गुड़गांव

विजय अपनी घड़ी की तरफ बेचैनी से देख रहा था। छह महीने पहले, जब वो कजाखस्तान से लौटा था, उसे देर रात एक रहस्यमय फोन कॉल आया था। फोन करने वाले ने, जो उसके लिए अनजान था, उससे एक अजीब सी गुजारिश की थी। उसने छह महीने बाद मुलाकात की बात कही थी और विजय को मनाने के लिए एक ईमेल भेजा था।

ईमेल की विषय वस्तु ऐसी थी जिससे विजय फोन करने वाले को गंभीरता से लेने के लिए राजी हो गया था। इस बात की पुष्टि हो गई थी कि फोन पर बात कर रहा वो अजनबी, सचमुच उसके पिता प्रताप सिंह का साथी था। फोन करने वाले ने एक और चीज का इशारा किया था। दरअसल प्रताप सिंह ने उसे, पंद्रह साल पहले एक कार हादसे में मौत से थोड़ी देर पहले, कुछ सामान दिया था।

सिर्फ दो दिन पहले, उस दिन से पूरे छह महीने बाद, अजनबी ने दोबारा फोन किया था और मुलाकात के लिए एक तारीख और समय तय किया था। विजय ने अपनी घड़ी की तरफ दोबारा देखा। मुलाकात के तय समय से दस मिनट ज्यादा बीत चुके थे। वो ये सोचने लगा था कि ये पूरा खेल सिर्फ एक बड़ा धोखा है।

विजय सोच रहा था कि क्या फोन करने वाला रहस्यमय शख्स किसी तरह से ऑर्डर से जुड़ा तो नहीं है। क्या ये कोई ऐसी योजना हो सकती है जिसमें उसे खत्म करने की साजिश रची गई हो? वो जानता था कि ऑर्डर को अपना बदला लेना है। वो उनके रास्ते में दो बार आ चुका था और दोनों बार जीवित बच गया था। इसलिए नहीं कि ऑर्डर ने लापरवाही या दया दिखाई थी; ये सिर्फ उसकी खुशकिस्मती थी, और कुछ नहीं। उसने चुपके-चुपके अपनी बाईं ओर कुछ टेबल दूर बैठे दो नौजवानों को देखा जो अपने स्मार्टफोन के साथ व्यस्त थे।

उसकी सुरक्षा टुकड़ी।

वो आसानी से दो टेक्नीशियन समझे जा सकते थे लेकिन विजय उन्हें बेहतर जानता था। कजाखस्तान से लौटने के बाद, उसने उनके साथ छह महीने बिताए थे। उसने काफी नजदीक से उन्हें देखा था और उनकी विशेषज्ञता के प्रति उसके मन में इज्जत बढ़ गई थी। उनके आसपास होने पर वो सुरक्षित महसूस करता था।

हालांकि, अब तक, चीजें शांत ही रही थीं। विजय समझ नहीं पाया था कि ऑर्डर ने अब तक कोई कोशिश क्यों नहीं की थी। ऐसा नहीं था कि वो चाहता था कि उन्हें कोशिश करनी चाहिए। लेकिन टास्क फोर्स में हर कोई मानता था कि उसके अलावा, शुक्ला, कोलिन, एलिस और इमरान को खत्म करने के मकसद से निशाना बनाया जाएगा। इस आशंका के पीछे एक तर्क था। ऑर्डर को उनकी पहचान पता चल चुकी थी, भले ही उसे टास्क फोर्स के अस्तित्व का पता नहीं था। इमरान पिछले साल आरपीजी हमले का निशाना बन चुका था, जबकि एलिस पर ग्रीस और दिल्ली दोनों जगह हमला

किया गया था। विजय खुद कजाखस्तान में मौत के चंगुल से बाल-बाल बचा था।

तो अब ऑर्डर चुप क्यों बैठा था?

ये सिर्फ उसके सुरक्षाकर्मियों की वजह से तो नहीं था। स्टारबक्स के आउटलेट में उन दो आदमियों के अलावा, साइबर हब में चारों तरफ सुरक्षाकर्मी गुप्त रूप से फैले हुए थे। दूसरे लोगों को भी ऐसी ही सुरक्षा दी गई थी।

लेकिन विजय को इस बारे में संदेह था कि ऑर्डर को उसे और उसके दोस्तों को मिली सुरक्षा के बारे में जानकारी थी। सुरक्षाकर्मियों की टीम को हिदायत दी गई थी कि वो छिपकर रहें और विजय से इतनी दूरी बनाकर रखें कि किसी को संदेह ना हो, साथ ही इतने करीब भी रहें कि जरूरत पड़ने पर तुरंत मदद कर सकें। अगर ऑर्डर ने अभी तक हमला नहीं किया था, तो इसकी कोई वजह होगी। और इससे वो घबरा रहा था।

उसका दिमाग उस ईमेल की तरफ चला गया जो उसे फोन करने वाले रहस्यमय शख्स की तरफ से छह महीने पहले मिला था।

विजय,

तुम मुझे नहीं जानते हो। मैं तुम्हारे पिता, प्रताप का दोस्त हूं। हम एएसआई में साथ काम करते थे। मैं उसके साथ किशनगढ़ में था, खुदाई की इकलौती जगह जहां तुम उसके साथ गए थे। तुम्हें वहां टेराकोटा की एक मुहर मिली थी। मुझे याद है और उम्मीद है कि तुम्हें भी याद होगा।

मुझे तुमसे मिलना है। ये जरूरी है। तुम्हारे पिता को किशनगढ़ में कुछ मिला था जिसे उसने उस वक्त मुझसे छिपा लिया था। ये कुछ बड़ी चीज थी। मैं तब नहीं जानता था लेकिन अब मैं जानता हूं। और मैं इसे तुम्हारे साथ बांटना चाहता हूं। ये जरूरी है। अभी मैं तुम्हें बस इतना बता सकता हूं कि पिछले पचास वर्षों के दौरान हुई कई पुरातात्विक खोजों से इसका संबंध है। इसके नतीजे काफी दूरगामी हैं। जिस दुनिया को हम जानते हैं वो खतरे में है।

हमें मिलना ही होगा। मैं इस मुलाकात को तय करने के लिए तुम्हें फोन करूंगा।

सम्मान सहित,

केएस

फोन करने वाले अजनबी ने इस ईमेल को बस इसलिए भेजा था ताकि विजय के पिता के साथ उसके रिश्ते का सुबूत दिया जा सके। और उसका मकसद पूरा भी हुआ था। विजय को किशनगढ़ की वो खुदाई वाली जगह और मुहर खोजने की बात याद आ गई थी। उस समय वो काफी उत्साहित था। उसे ये भी याद था कि उसके पिता कितने खुश हुए थे।

'तुम्हारी पहली पुरातात्विक खोज है, बेटे,' उन्होंने गर्व से बुदबुदाते हुए, और उसके कंधे थपथपाते हुए कहा था। 'एक दिन तुम बेहतरीन पुरातत्वविद बनोगे!'

लेकिन किस्मत ने विजय के लिए कुछ और ही सोच रखा था। कार हादसे में उसके माता-पिता की मौत और प्रताप के बड़े भाई, विक्रम सिंह के उसे अनौपचारिक रूप से गोद लेने के बाद, उसका करियर बिलकुल अलग दिशा में मुड़ गया था।

ईमेल ने विजय के दिल के एक और कोने को छू लिया था। पिछले साल, उसने भव्य किले की पांचवीं मंजिल पर एक कमरे का पता लगाया था, जिसमें उसके मृत

माता-पिता का सामान भरा था। इस संग्रह में किताबों, कागजों और दस्तावेजों से भरे गत्ते के ढेरों डिब्बे थे। विजय ने अपने माता-पिता के बारे में ज्यादा जानकारी हासिल करने के मकसद से इन चीजों को पूरी दिलचस्पी से पढ़ना शुरू कर दिया था।

ज्यादातर दस्तावेज काफी नीरस थे लेकिन राधा और उसे संयोग से एक फाइल और जर्नल मिल गए थे। जर्नल ने सिकंदर महान से जुड़े एक रहस्य और सिंधु नदी की भूमि तक उसकी यात्रा का खुलासा किया था। दूसरी तरफ, फाइल अपने आप में एक रहस्य थी। इसमें अखबार में छपे लेखों की कतरनें और उसके पिता की लिखावट में टिप्पणियां थीं जिनका संबंध पूरी दुनिया में हो रही पुरातात्विक खुदाई से था।

उसके पिता ने इतनी मेहनत से इन लेखों, टिप्पणियों और रेखाचित्रों को क्यों इकट्ठा किया था और उन्हें इतनी सावधानी से क्यों रखा था, इस सवाल का जवाब उसे या राधा को उस वक्त नहीं मिल पाया था। लेकिन विजय को इस बात का पक्का भरोसा था कि इतने असाधारण प्रयास के पीछे जरूर कोई वजह होगी।

जब उसे ये ईमेल मिला था, उसे इन सबका मतलब समझ आ गया था। उसने अपनी समझ लगाते हुए पहेली को सुलझा लिया था। उसके पिता को किशनगढ़ में कुछ मिला था। कुछ बड़ा, जैसा ईमेल भेजने वाले ने बताया था। वो चीज जो भी थी, उसके पिता ने उसे गुप्त रखने की जरूरत समझी थी।

लेकिन क्यों*?*

और फिर, ईमेल में एक और खुलासा था—पिछले पचास वर्षों की कई पुरातात्विक खोजों का इससे संबंध था। फोन करने वाले अजनबी को इस संबंध का पता अभी-अभी लगा था, लेकिन क्या उसके पिता ने इसका पता तभी लगा लिया था? तब क्या होता अगर उसके पिता की किशनगढ़ की खोज एक ज्यादा बड़ी खोज की तरफ उन्हें ले जाती? सावधानी से इकट्ठा किए ुए लेखों के पीछे यही वजह हो सकती थी।

अचानक विजय एक निष्कर्ष पर पहुंचा। उसके पिता फाइल में इकट्ठा चीजों की मदद से उन सभी पुरातात्विक खोजों के बीच संबंध का अध्ययन कर रहे थे*!*

और फाइल के इंडेक्स में दो एंट्री का नाम “केएस-1” और “केएस-2”, रखा गया था। ये सिर्फ संयोग नहीं हो सकता था कि उसे फोन करने वाले रहस्यमय शख्स के नाम के शुरुआती अक्षर भी केएस ही थे।

ये बात विजय के दिमाग में बिजली की तरह कौंध गई। उसे इस बात का आश्चर्य भी हुआ कि सिकंदर के रहस्य, जिसे वो लोग पिछले साल सुलझाने में नाकाम रहे थे, से जुड़ा एक लेख फाइल के लेखों में भी था।

यही नहीं, वो जर्नल जिसमें सिकंदर के भारत के गुप्त मिशन की कहानी थी, उसका नाम “केएस-1” था।

बहुत सारे संयोग।

क्या सिकंदर का रहस्य किसी तरह से फाइल की दूसरी पुरातात्विक खोजों से जुड़ा था? और अगर ऐसा था, तो कैसे? पिछले छह महीने से विजय के दिमाग में ये सवाल घर कर गया था।

और जब उसने फाइल बनाने के अपने पिता के इरादे पर विचार किया तो उसके दिमाग में एक और बड़ा सवाल उभरा। महाभारत का सिकंदर के रहस्य से मजबूत संबंध था। पिछले साल स्वयं उसने इसके सबूत देखे थे। तो, क्या फाइल की खोजों से

महाभारत का भी कोई संबंध था? वो समझ नहीं सका कैसे, लेकिन इसकी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता था।

अपना दिमाग खूब दौड़ाने के बाद भी वो सारी कड़ियों को जोड़ नहीं सका। वो इस मुलाकात के दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

और अब, वो बैठा हुआ उसका इतंजार कर रहा था जिसे वो जानता नहीं था, उससे कभी मिला नहीं था और जो नहीं भी आ सकता था। ये ख्याल कि ये उसके साथ एक बहुत बड़ा धोखा था, उसके दिमाग में दोबारा आया और वो मायूस सा होने लगा। पिछले छह महीने में पैदा हुई उसकी सारी उम्मीदें और उत्साह रेगिस्तान में खत्म होने वाले हाइवे की तरह समाप्त होने लगीं। एक ऐसा रोमांचक सफर जो कहीं नहीं ले जा रहा था और जिसकी नियति निराशा के रेगिस्तान में खत्म हो जाना थी।

7

स्टारबक्स, साइबर हब, गुड़गांव

विजय के आसपास की टेबल भर चुकी थीं लेकिन उसे फोन करने वाला अजनबी अभी तक नहीं दिख रहा था। उसने फैसला किया कि अब चला जाए। अब ज्यादा इंतजार करने का कोई मतलब नहीं था।

वो उठा, कॉफी शॉप से बाहर निकला और पार्किंग में लगी अपनी कार की तरफ चलने लगा। उसकी सुरक्षा में लगे दोनों नौजवान अपनी टेबल पर ही बैठे रहे लेकिन उसकी सिक्योरिटी टीम, जो बाहर भीड़ में घुली-मिली थी, तक ये संदेश तुरंत पहुंच गया कि वो निकल गया है।

विजय मुश्किल से कुछ गज चला होगा कि एक लंबा, दुबला-पतला आदमी, जिसने एक बड़ी टोपी लगा रखी थी जिससे उसका ज्यादातर चेहरा ढका हुआ था, एकाएक उसके पास पहुंचा और उसकी बांह पकड़ ली। चौंककर, विजय ने उस आदमी को दूर हटाने की कोशिश की लेकिन, दुबले-पतले दिखने के बावजूद उस अजनबी की पकड़ विजय की कोशिशों के जवाब में और मजबूत होती गई।

आदमी तेज-तेज चल रहा था और उसने विजय को अपने साथ खींचते हुए उसके कान में फुसफुसाकर कहा, 'जल्दी करो, मेरे साथ आओ। हमें यहां से बाहर निकलना है। मेरा पीछा किया जा रहा है।'

विजय ने बोलने के लिए मुंह खोला लेकिन उस अजनबी ने तुरंत अपना चेहरा उठाया और उसकी तरफ देखा, विजय को भी उसके चेहरे की एक झलक मिली।

'मैं केएस हूं,' उस आदमी ने कहा, जो विजय को खींचता ले जा रहा था जबकि विजय भी अब उसकी रफ्तार से चलने लगा था। 'प्रताप का दोस्त, किशनगढ़।'

दोनों आदमी साइबर हब कार पार्क की तरफ से दूर जाने लगे और वो इस लोकप्रिय शॉपिंग और रेस्टोरेंट कॉम्प्लेक्स से सटी ऑफिस की बिल्डिंग में से एक की तरफ चल पड़े। जब वो भीड़ से बाहर निकलकर उस खुली जगह में पहुंचे जो बिल्डिंग को साइबर हब से अलग करती थी, केएस ने दौड़ना शुरू कर दिया, उसने अभी भी विजय की बांह पकड़ रखी थी।

'हम कहां जा रहे हैं?' विजय ने हांफते हुए पूछा, वो भी केएस के साथ दौड़ रहा था।

कोई जवाब तो नहीं मिला लेकिन विजय जान गया था कि केएस का लक्ष्य क्या था। वो उन लोगों को दूर भगाना चाहता था जो उसका पीछा कर रहे थे।

विजय के दिमाग में एक और विचार आया जिससे वो घबरा गया। क्या केएस विजय की सुरक्षा टुकड़ी को भी चकमा देने की कोशिश कर रहा था?

उनके पीछे एक हंगामा होने लगा था, लेकिन दोनों में से किसी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आवाज से ये एक झगड़े जैसा लग रहा था लेकिन झगड़े और शोरगुल को

नजरअंदाज करते हुए दोनों उस जगह से दूर जाने के लिए दौड़ते रहे।

केएस उनके सामने की एक बिल्डिंग में खाली जगह में सीधा दौड़ता रहा और फिर दाहिनी ओर मुड़ गया, ये ढलान कारों के आने-जाने के लिए बनी थी और ये दिल्ली-जयपुर एक्सप्रेसवे पर खुलती थी। जब वो इस ढलान पर दौड़ लगा रहे थे, विजय को समझ आया कि वो कहां जा रहा है। कार पार्किंग की तरफ।

विजय को आश्चर्य हुआ कि इस आदमी को ऐसी हाई सिक्योरिटी बिल्डिंग की पार्किंग तक पहुंच कैसे मिली है।

कौन है ये आदमी? और वो उसे क्या बताना चाहता था? विजय इस अजनबी के साथ इतनी दूर तक सिर्फ इस वजह से आया था ताकि वो अपने पिता के दस्तावेजों के पीछे छिपे रहस्य को समझ सके। उसके मन में कहीं भीतर ये उम्मीद भी थी कि वो अपने पिता के बारे में कुछ जान सकेगा; जिसकी कमी उसे अपनी किशोरावस्था के दौरान खलती थी। कुछ ऐसा जिसे वो अपने माता-पिता की निशानी समझकर संजो सके।

वो लोग पार्किंग लॉट के निकास द्वार की तरफ दौड़ रहे थे, लेकिन तभी विजय को चौंकाते हुए, केएस ने कार पार्क की तरफ जाने के रास्ते को नजरअंदाज कर दिया और दोपहिया वाहनों की पार्किंग की तरफ चल दिया। दौड़ते हुए ही, उसने अपनी टोपी उतारी, उसे मोड़ा और अपनी कमर में बंधी एक थैली में ठूंस दिया।

200 से ज्यादा सीसी इंजन वाली एक काली मोटरसाइकिल उनके पास खड़ी थी और केएस उसकी तरफ गया। उसने तेजी से हेल्मेट पहनी, बाइक पर चढ़ा और इंजन स्टार्ट कर दिया और विजय पीछे की सीट पर बैठ गया। एक्सलरेटर की गरज के साथ, बाइक निकास द्वार से निकल पड़ी। वो हाइवे पर दौड़ रही कारों और दोपहिया वाहनों के बीच से दक्षता से निकलता गया और जब वो हाइवे से लगी एक स्लिप रोड पर पहुंचे तो उसने बाइक की रफ्तार तेज कर दी।

विजय सोच रहा था कि उसकी सुरक्षा टुकड़ी कहां थी। निश्चित रूप से वो पीछे नहीं छूटे होंगे? और वो लोग कहां थे जो केएस के पीछे लगे थे? वो अब पीछा करते क्यों नहीं दिख रहे थे? अगर वो उसका पीछा यहां तक कर रहे थे, तो अब वो उसे इतनी आसानी से बच निकलने कैसे दे रहे थे?

उसके मन में एक सर्द डर समा गया कि कहीं केएस ने उसका पीछा किए जाने की झूठी कहानी तो उसे नहीं सुनाई थी। अगर ये विजय को उसके सुरक्षा कवच से बाहर निकालने और सुरक्षाकर्मियों से दूर करने का जाल हुआ तो क्या होगा? आखिरकार, वो इस आदमी के बारे में क्या जानता था? वो कैसे इस आदमी पर भरोसा कर सकता था? विजय के दिमाग में कई तरह के संदेह और शंकाएं घूम रही थीं और उसके बाइक पर अपना संतुलन बनाए रखने के लिए उसे मजबूती से पकड़ रखा था क्योंकि केएस ट्रैफिक के बीच पूरी रफ्तार से आड़ा-तिरछा चलते हुए बाइक दौड़ा रहा था।

लेकिन अब काफी देर हो चुकी थी। बाइक एक फ्लाइओवर के नीचे से यू-टर्न लेने के बाद अब हाइवे पर दौड़ रही थी, और इसकी रफ्तार 100 किलोमीटर प्रति घंटे से भी ज्यादा थी। उसे इस आदमी से छुटकारा पाने के लिए रास्ता ढूंढना होगा। या, वो कोशिश कर सकता है कि सही मौके पर इस आदमी को अपने वश में कर ले। केएस उसके मुकाबले कहीं ज्यादा उम्र का था और ऐसा नहीं लगता था कि वो ज्यादा विरोध

कर पाएगा। शायद इसीलिए उसने चालबाजी की सहारा लिया ताकि वो विजय को कमजोर स्थिति में ला सके। शायद उसके साथी कहीं इंतजार कर रहे होंगे।

अभी तो विजय बस यही कर सकता था कि इंतजार करे क्योंकि अब वो लोग हाइवे पर दिल्ली की तरफ जा रहे थे।

8

साकेत, नई दिल्ली

विजय तब और चौंक गया, जब उसने देखा कि केएस दिल्ली के ट्रैफिक के बीच से निकलता हुआ अब शहर के सबसे व्यस्त रहने वाले मॉल में से एक की अंडरग्राउंड पार्किंग लॉट में प्रवेश कर रहा था। उसने सोचा था कि केएस उसे लेकर शहर के अस्त-व्यस्त इलाके में जाएगा, जहां उन्हें ढूंढना मुश्किल होगा, अगर कोई उन्हें ढूंढने की कोशिश करे।

विजय ने इस आदमी के बारे में कोई राय बनाने की कोशिश तब तक के लिए छोड़ दी जब तक उसे इससे बात करने का मौका नहीं मिल जाता। पिछले एक घंटे के दौरान अपने अनिश्चय से वो खुश नहीं था; वो मानता था कि वो हमेशा ही लोगों के स्वभाव को सही आंकता है। फिर भी, उसने केएस के बारे में अपनी राय कई बार बदल ली थी। ये एक संकेत था कि विजय कितना परेशान था—उसके पास ढेरों सवाल थे जिन्हें वो पूछना चाहता था। कितनी सारी बातें उसे जानने की जरूरत थी...और इससे उसकी मानसिक शक्ति पर असर हो रहा था।

केएस ने विजय के चेहरे पर दुविधा को समझ लिया और उसकी तरफ देखकर सिर हिलाया। 'वो लोग हमारे पीछे यहां तक नहीं आ पाए हैं। आओ, हम ऊपर चलें। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। देर-सवेर वो हमारा पता लगा लेंगे। और हमें काफी बातें करनी हैं।' वो जल्दी-जल्दी बोल रहा था। हेल्मेट की जगह फिर से टोपी ने ले ली थी।

उन्होंने लिफ्ट ली और मॉल में स्टारबक्स की तरफ चल दिए।

'स्टारबक्स क्यों?' विजय जानना चाहता था।

केएस के होंठों पर हल्की सी मुस्कुराहट आई। 'ये हाई प्रोफाइल जगह है। उन लोगों के लिए अपनी चाल आजमाने के लिए सही नहीं है। यहां अगर कुछ भी होता है तो पूरी मीडिया में इसकी जानकारी फैल जाएगी और वो ऐसा नहीं चाहेंगे। मौजूदा हालातों में ये सबसे सुरक्षित जगह है।'

'फिर हमने साइबर हब के स्टारबक्स को क्यों छोड़ दिया?'

केएस ने बेचैनी से अपनी जीभ चटकाई। 'तुम स्टारबक्स से बाहर निकले थे। मैं तो अंदर ही नहीं जा सका था। और अच्छा हुआ कि मैं अंदर नहीं गया। हम अंदर तो सुरक्षित रहते लेकिन कभी ना कभी हमें बाहर आना होता। और तभी वो हम पर निशाना साध लेते। शायद कार पार्क में। कौन जानता है?'

उन लोगों ने कॉफी का ऑर्डर दिया और बैठ गए। कुछ पलों तक, खामोशी रही। दोनों ही सोच रहे थे कि बातचीत की शुरुआत कैसे करें।

अंत में, केएस ने ही चुप्पी तोड़ी। उसने कॉफी का एक घूंट लिया और बोला। 'मैं जानता हूं कि तुम्हारे मन में ढेरों सवाल होंगे। ये सब तुम्हें थोड़ा अजीब लग रहा होगा।

तुम्हें किशनगढ़ में मेरा साथ याद नहीं आएगा। उस बात को पच्चीस साल हो गए। मुझे नहीं पता कि तुम्हें किशनगढ़ का अपना अनुभव भी याद है या नहीं। तब तुम एक छोटे बच्चे थे।' उसने विजय की तरफ देखा। 'और तुम मुझ पर भरोसा नहीं करके सही कर रहे हो। तुम्हें किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिए।'

विजय ने उसकी तरफ पलटकर देखा। भले ही टोपी ने उसके चेहरे का ज्यादातर हिस्सा ढक रखा था, उसके दाहिने गाल पर घाव के निशान विजय को दिख गए, अब जबकि वो उस आदमी के बिलकुल सामने बैठा था। उसे पता नहीं था कि केएस के चेहरे पर ये निशान कैसे आए लेकिन वो काफी दर्दनाक रहे होंगे। इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि वो इस विकृति को छिपाने की कोशिश करता था।

'मुझे तुम्हारे कुछ सवालों का अनुमान लगाने दो,' केएस ने बात आगे बढ़ाई, वो विजय के घूरने से बेपरवाह था। 'जैसा मैंने तुम्हें अपने ईमेल में बताया था, तुम्हारे पिता और मैं भारत के पुरातात्विक सर्वेक्षण में साथ काम किया करते थे। जैसा तुम जानते हो, तुम्हारे पिता भारत के दिग्गज पुरातत्वविद थे। मेरा काम एक इतिहासकार और प्राचीन दस्तावेजों और कलाकृतियों को संरक्षित रखने वाले विशेषज्ञ का था। हम अक्सर एक टीम की तरह काम करते थे—उसका काम फील्ड में होता था और मेरा प्रयोगशाला में।' उसने विजय की तरफ देखा ये सुनिश्चित करने के लिए कि वो ध्यान से बातें सुन रहा है या नहीं।

विजय ने सहमति में सिर हिलाया।

'हम किशनगढ़ में साथ थे,' केएस ने कॉफी के कप को निहारते हुए दोबारा कहा। 'वो एक अच्छी खुदाई थी, दिलचस्प। उनका स्तरों में विभाजन दिलचस्प था। हम एक ऐसे स्तर तक पहुंचे जो करीब 10,000 ईसा पूर्व का था।' उसने फिर विजय की तरफ देखा। 'तुम्हें टेराकोटा की वो मुहर याद है जो तुम्हें मिली थी? वो भी उसी समय की थी। 12000 साल पहले की।'

विजय ने कंधे उचकाए। 'मैं पुरातत्वविद नहीं हूं लेकिन सुनकर तो ऐसा लग रहा है कि ये एक यादगार खोज रही होगी। मेरे ख्याल से भारत में इतनी पुरानी और कोई जगह अब तक नहीं ढूंढ़ी गई होगी।'

केएस ने हामी भरी। विजय समझ गया कि केएस की बातों में कुछ अर्थ छिपे हैं और उसे उन्हें समझना है। विजय का तेज दिमाग पहले से ही काम करने लगा था और उसके चक्के अपनी जगह पर घूमते हुए उसके विचारों को गति दे रहे थे।

'लेकिन अगर ये खुदाई इतनी अहम थी तो हमने इसके बारे में सुना क्यों नहीं? विजय बुदबुदाया, वो अपने पिता की फाइल के बारे में सोचने लगा था। उसे ऐसा कोई लेख याद नहीं आया जिसमें किशनगढ़ की खुदाई का जिक्र हो, हालांकि ये मुमकिन था कि उसके पिता ने इस फाइल को बनाने की शुरुआत खुदाई के बाद की हो। 'या ये इतना गूढ़ है कि सिर्फ पुरातत्वविद ही इसके बारे में जानते हैं? मैं तो सोच रहा था कि इसने सुर्खियां बना ली होंगी।'

केएस के चेहरे पर उन दोनों की मुलाकात के बाद पहली बार मुस्कुराहट आई। 'मैं जानता था कि तुम पर मेरा भरोसा करना गलत नहीं था। तुम्हारे अंदर तुम्हारे पिता जैसी खूबियां हैं। और तुम सही कह रहे हो। ये बड़ी खोज कभी प्रकाशित नहीं हुई। दूसरी कई खोजों की तरह।'

विजय एक बार फिर अपने पिता की फाइल के बारे में सोचने लगा जिसे बड़ी मेहनत से बनाया गया था। क्या फाइल और इस बातचीत में कोई संबंध था? कई ऐसी खोज थीं जो प्रकाशित हुई थीं वरना वो उस फाइल में जगह नहीं हासिल कर पातीं। उसने अपने इस विचार को दूर हटा दिया। अभी उसे यहां से कई चीजें पता लगनी थीं। फाइल के बारे में फिर कभी सोचा जा सकता था। आखिर इतने सालों का इंतजार तो फाइल ने किया ही था।

'तुम्हारे पिता को यहां से कुछ मिला था,' केएस ने बात आगे बढ़ाई। 'मैं नहीं जानता कि वो क्या था लेकिन मैं ये जानता था कि वो कोई चीज मुझसे छिपा रहा था। मैं यहां बस अनुमान लगा सकता हूं लेकिन मेरा मानना है कि उस चीज का संबंध या तो उस स्तर से था जो करीब 2000 ईसा पूर्व की थी या उस स्तर से जो सबसे गहरी थी और 10000 ईसा पूर्व की थी। यही वो दो स्तर थे जहां तुम्हारे पिता ने जोर देकर कहा था कि उस मुहर के अलावा वहां कुछ मिलने की उम्मीद नहीं थी, जो तुमने हासिल की थी।'

'लेकिन इससे तो कोई मतलब नहीं निकलता,' विजय ने तेजी से पलटकर कहा, पिता पर आरोप लगने से उसकी आवाज में कड़वाहट आ गई। 'शायद वो इस बारे में सच कह रहे हों। शायद उन स्तरों पर कुछ मिलने की उम्मीद नहीं रही होगी।'

केएस ने विजय को कुछ पलों तक ध्यान से देखा। 'मैं तुम्हारे पिता पर कुछ चुराने का आरोप नहीं लगा रहा हूं,' उसने साफ किया। 'मैं मानता हूं कि वो उस चीज से डरा हुआ था जो उसे मिली थी। और इसलिए उसने वो चीज मुझसे छिपाई, एएसआई से छिपाई। उस खुदाई के बारे में उसकी रिपोर्ट में ऐसा कुछ नहीं था जो इतने निचले स्तर तक खुदाई को सही ठहराता। और उसकी रिपोर्ट में 2000 ईसा पूर्व के स्तर का सिर्फ जिक्र भर था। एक वाक्य। बस।' वो रुका, हिचकिचाया। 'और उसने टेराकोटा की उस मुहर का भी जिक्र नहीं किया था जो तुम्हें मिली थी। ये रिपोर्ट में नहीं था।' वो रुका, और अपने शब्दों का असर देखने लगा। उसने विजय की तरफ घूरकर देखा, इस उम्मीद में कि उसका दांव सही पड़ जाए।

'तो आप कहना क्या चाह रहे हैं?' विजय ने कड़े स्वर में पूछा। 'मेरे पिता एक आधिकारिक रिपोर्ट में कोई चीज क्यों छिपाएंगे?'

'बिलकुल सही। उस साल जून में,' केएस ने जवाब दिया, 'मुझे अमेरिका में एक शिक्षाविद की तरफ से एक पैकेट मिला जिससे मेरी मुलाकात कुछ साल पहले एक कॉन्फ्रेंस में हुई थी। उस पैकेट में अंग्रेजी के दो जर्नल्स थे। मैंने उन दोनों को पढ़ा लेकिन ऐसा लगता था जैसे वो काल्पनिक दुनिया से आए थे...' वो रुका जब उसने विजय के चेहरे पर आए भाव देखे। 'कुछ दिक्कत है?' उसने पूछा।

9

स्टारबक्स
साकेत, नई दिल्ली

'मैं अंदाजा लगाता हूं,' विजय के तेज दिमाग ने कड़ियों को जोड़ लिया था जब केएस बोल रहा था। 'उनमें से एक जर्नल किसी प्रोफेसर फुलर का अनुवाद था। सिकंदर महान के एक सेनापति यूमेनीज द्वारा लिखे ग्रीक जर्नल का अनुवाद।'

केएस चौंक गया। 'हां, बिलकुल सही। तुमने कैसे अंदाजा लगाया?'

विजय हिचकिचाया। क्या वो इस अजनबी को इतने अच्छे से जानता है कि उस पर भरोसा कर ले? खासकर तब जब वो उसके पिता पर ऐसे आरोप लगा रहा था जिस पर विजय विश्वास नहीं करना चाहता था? उसने खतरा उठाने का फैसला कर लिया।

'मुझे वो जर्नल अपने पिता के दस्तावेजों में मिला,' उसने समझाया। 'पिछले साल ही। डैड ने मुझे इसके बारे में कभी नहीं बताया जब वो जिंदा थे।'

केएस ने सहमति में सिर हिलाया। 'मैं नहीं सोचता कि वो ऐसा करता। मैं तो ये सोच रहा था कि उसने तुम्हें ये दिया कैसे। जहां तक मैं समझ रहा हूं, उसने तुम्हें ये दिया नहीं था। तुम्हें संयोग से ये जर्नल मिल गया होगा।'

'मैं उनके सामान से भरे गत्ते के डिब्बों को देख रहा था तभी मेरे सामने वो जर्नल आ गया,' विजय ने साफ किया। 'ये महज एक संयोग था।'

'सिर्फ दो ऐसे लोग थे जिन्हें मैंने इन जर्नल्स के बारे में बताया था,' केएस ने अपनी बात आगे बढ़ाई, वो विजय की दी हुई सफाई से संतुष्ट दिख रहा था। 'जब मुझे पैकेट मिले थे, मैंने उस शिक्षाविद से संपर्क करने की कोशिश की थी जिसने मुझे ये भेजे थे। उसका नाम था माइक ऐशफोर्ड और वो फिलाडेल्फिया के सेंट जेम्स कॉलेज में पढ़ाता था। हम दोस्त नहीं थे। हम एक कॉन्फ्रेंस में मिले थे, थोड़ा घुल-मिल गए थे और फिर लगातार एक-दूसरे के संपर्क में थे। वो मुझे नव वर्ष और दीवाली की शुभकामनाएं भेजता था और मैं उसे हर साल क्रिसमस कार्ड भेजता था। फिर, कभी-कभी हम एक-दूसरे को चिट्ठियां लिखा करते थे। इंटरनेट की वजह से, हमारी बातचीत ईमेल के माध्यम से ज्यादा होने लगी थी, लेकिन एकाएक उसकी तरफ से ये पैकेट पाकर मैं थोड़ा आश्चर्यचकित रह गया था। दो जर्नल्स का पैकेट। इस बारे में जानकारी देने का कोई ईमेल मुझे पहले नहीं मिला था; ना ही उनके साथ कोई चिट्ठी थी, इस अजीब चीज को भेजने के लिए कोई वजह भी नहीं बताई थी। और जब मैंने इसकी वजह जानने के लिए उससे संपर्क करने की कोशिश की, तो मुझे बताया गया कि वो गायब है। वो उसी दिन रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था जिस दिन उसने फिलाडेल्फिया से कुरियर भेजा था। पुलिस के पास कोई सुराग नहीं था और मामला अनसुलझा रह गया था,' केएस पल भर के लिए रुका। विजय ने गौर किया कि वो काफी परेशान दिखने लगा था।

'मैंने जर्नल पढ़े और मुझे उनका कोई मतलब समझ नहीं आया। जैसा मैंने कहा,

वो मुझे किसी पुराने लेखक की लिखी हुई काल्पनिक कहानियों जैसे लगे। लेकिन जिस चीज ने मेरा ध्यान खींचा, वो इन जर्नलों के साथ जुड़े कई संयोग थे। पहला था प्रोफेसर फुलर, जिसने दोनों जर्नलों का अंग्रेजी में अनुवाद किया था, जैसा जर्नलों के पहले पन्ने पर लिखा था। वो भी शिकागो में रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था, ऐशफोर्ड के गायब होने के दो हफ्ते पहले। और कॉलेज के एक प्रोफेसर की उसी दिन मोटर हादसे में मौत हो गई थी जिस दिन ऐशफोर्ड ने मुझे पैकेट भेजा था। इसलिए मैंने अंदाजा लगाया, कि काल्पनिक हो या नहीं, इन जर्नलों में कुछ तो खास जरूर है। कोई ना कोई वजह रही होगी जिससे ऐशफोर्ड ने उन्हें मेरे पास भेजा था,' उसने अपनी बात खत्म की।

विजय ध्यान से सुन रहा था। उसे जर्नलों के पीछे की कहानी नहीं पता थी। और, वो जानता था कि कम से कम एक जर्नल की कहानी काल्पनिक नहीं थी, जो केएस नहीं जानता था। यूमेनीज का जर्नल और उसकी कहानी सच्ची थी।

'मैं नहीं जानता था कि इसका क्या करूं,' केएस ने बात आगे बढ़ाई। 'इसलिए मैंने दो लोगों से सलाह ली। एक तुम्हारे पिता थे। मैंने उन्हें पढ़ने के लिए दोनों जर्नल दिए। मुझे उम्मीद थी कि वो उनका कोई मतलब निकाल लेगा। दूसरा आदमी ऐसा शख्स था जिससे मैं अमेरिका में एक दूसरे कॉन्फ्रेंस में मिला था। उसे वहां एक अतिथि वक्ता के रूप में बुलाया गया था, ताकि वो उन ऐतिहासिक तथ्यों पर अपने विचार रख सके जो ये बताते हैं कि कैसे शताब्दियों से मानव जाति का विकास हुआ है। तुमने उसके बारे में सुना हो सकता है। उसने मानव जाति की विस्मृत जड़ों को विषय बनाकर पांच किताबें लिखी हैं। वो एक कामयाब बिजनेसमैन भी है। कुर्त वॉलेस।'

विजय तनकर बैठ गया। कुर्त वॉलेस ही वो शख्स था जिसने ग्रीस में एलिस के प्रोजेक्ट को प्रायोजित किया था और टाइटन फार्मास्युटिकल्स का सबसे बड़ा शेयरहोल्डर भी था। टास्क फोर्स के कई सदस्यों को संदेह था कि वो ऑर्डर का हिस्सा है।

'क्या आपने वॉलेस को जर्नल दिए थे?' विजय जानना चाहता था कि क्या इससे ये साबित हो सकेगा कि वॉलेस को सिकंदर के रहस्य की जानकारी थी।

केएस ने इनकार में सिर हिलाया। 'नहीं। सिर्फ तुम्हारे पिता के पास जर्नल थे। और वही इकलौती प्रतियां थीं। सच कहूं तो मैंने सोचा था कि वो गायब हो चुकी हैं। मैंने उन्हें तुम्हारे पिता को सुरक्षित रखने के लिए दिया था। मेरा अनुमान है कि मैं भी भयभीत था। अगर इन जर्नलों की वजह से इतने सारे लोग गायब हो गए थे या मारे गए थे, तो क्या होगा अगर किसी को पता चल जाए कि ऐशफोर्ड ने उन्हें मुझे भेजा था? उन्हें तुम्हारे पिता को देकर, मैंने मान लिया था कि अब मुझ पर कोई मुसीबत नहीं आएगी।'

'लेकिन डैड मारे गए थे,' विजय ने थोड़े गुस्से से इस बात की तरफ इशारा किया। वो अब सोच रहा था कि क्या कार हादसा महज एक हादसा नहीं था। क्या ये जर्नल उसके पिता की मौत की वजह थे? उनमें से एक ने छह महीने पहले करीब-करीब उसे और उसके दोस्तों को मौत के पास पहुंचा ही दिया था।

'कार हादसा इसके करीब नौ साल बाद हुआ था,' केएस ने कहा। 'और कोई भी मेरे पास जर्नल के बारे में पूछता हुआ नहीं आया। अगर किसी की नजर उन जर्नलों पर थी तो मुझ तक पहुंचना सही कदम होता। फिर वो कैसे जान सकते थे कि तुम्हारे पिता

के पास वो जर्नल थे?'

विजय को सहमत होना पड़ा।

'जब मैंने तुम्हारे पिता को जर्नल दिए थे, किशनगढ़ की खुदाई चल रही थी। हमने वहां खुदाई करते हुए करीब एक साल बिता दिया था। मेरे उसे जर्नल देने के एकाध महीने बाद ही कुछ बदल गया था। उसने मुझसे दूरी बनानी शुरू कर दी। कुछ महीनों में, उसने खुदाई का काम ये कहकर बंद करने का फैसला किया कि वहां कुछ नहीं मिलने वाला था। और उसने वो रिपोर्ट सौंपी जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया। हमने उसके बाद साथ काम नहीं किया। मैं नहीं जानता क्यों।'

विजय अपनी ओर देख रहे इतिहासकार को घूरता रहा। 'क्या इसलिए आप मुझसे मिलना चाहते थे? मुझे ये बताने के लिए कि मेरे पिता ने पच्चीस साल पहले एएसआई से एक खुदाई के दौरान कोई चीज छिपाई थी?'

'नहीं। बात अभी खत्म नहीं हुई। किशनगढ़ के करीब नौ साल बाद मेरे पास अचानक तुम्हारे पिता का फोन आया। वो मुझसे मिलना चाहता था। मैं राजी हो गया। हम थोड़ी देर के लिए मिले, मुश्किल से पांच मिनट के लिए। वो जल्दी में था। उसे कहीं जाना था। लेकिन उसने मुझे उस बारे में ज्यादा नहीं बताया। उसने मुझे ये दिया।'

केएस ने अपनी कमर पर बंधी थैली में से एक कलाकृति निकाली। उसने इसे मेज पर रख दिया।

विजय उसे देखने के लिए झुका। ये एक अष्टभुज प्रिज्म था जिसकी आठों भुजाओं पर अजीब से अभिलेख खुदे हुए थे।

उसने ऐसी चीज इसके पहले कभी नहीं देखी थी।

भाग 4

अप्रैल

10

स्टारबक्स, साकेत, नई दिल्ली

विजय उस प्रिज्म को घूर रहा था जिसे केएस ने मेज पर रखा था। ये छोटा सा था—मुश्किल से 4 इंच ऊंचा—और ऐसा लगता था कि ये सफेद चॉक का बना है जिसकी आठों भुजाओं पर अभिलेख थे। उसने उसे छूकर देखा। ये कड़ा था—किसी तरह के सफेद पत्थर सा।

'ये क्या है?' उसने केएस की तरफ देखते हुए पूछा।

'सुमेरियाई या असीरियाई अष्टभुज प्रिज्म,' केएस ने जवाब दिया। 'इस पर कीलाक्षर लिपि में कुछ उत्कीर्ण है। मैं नहीं जानता कि इसमें क्या कहा गया है। मैं कीलाक्षर नहीं पढ़ सकता। लेकिन ऐसी पट्टियां सुमेरियाई, असीरियाई और हिटाइट लोग इस्तेमाल करते थे। ये आम तौर पर मिट्टी की बनी होती थीं लेकिन ये पत्थर से बनी है। इसका मतलब है कि ये खास है। इसका टिकाऊ होना जरूरी था। सिर्फ इसी वजह से पहले के लोग किसी भी चीज को पत्थर से बनाते थे। ये सुनिश्चित करने के लिए कि वो टिकी रहे।'

विजय ने प्रिज्म को उठाया और अपने हाथों में लेकर उसे पलटने लगा। 'उन्हें ये किशनगढ़ में मिला?'

केएस ने कंधे उचकाए। 'सच पूछो तो, मैं नहीं जानता। किशनगढ़, शायद जैसलमेर से 150 किलोमीटर दूर है, जो भारत-पाक सीमा के नजदीक है, और पाकिस्तान के बहावलपुर जिले से सटा है। ऐसी कलाकृति वहां मिलने की उम्मीद कोई नहीं करता, जिसके मिलने की संभावना इराक में ज्यादा है। दूसरी ओर, सिंधु नदी घाटी की मुहरें मेसोपोटामिया में खुदाई में मिली हैं, और मेसोपोटामिया की कलाकृतियां सिंधु नदी घाटी के स्थलों पर मिली हैं।
और किशनगढ़ में सिंधु नदी घाटी सभ्यता का एक स्तर था। इसलिए इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन कुछ भी पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता। हां, इस बात की संभावना भी है कि तुम्हारे पिता को ये किसी के निजी संग्रह से मिली हो। लेकिन मेरा मानना है कि ऐसा होने की संभावना बहुत कम है।'

विजय प्रिज्म को गौर से देखता रहा। 'आपने इस लिपि को किसी और से पढ़ाने की कोशिश नहीं की?'

'तब नहीं जब ये मेरे पास आया। तुम्हारे पिता ने मुझे ये कार हादसे वाले दिन दिया था। जैसा मैंने पहले कहा, वो मुझसे सिर्फ कुछेक मिनटों के लिए मिला था। उसे कहीं जाना था। उसने बस इतना कहा था, "केएस, इसे सुरक्षित रखना। और गुप्त भी। मुझ पर भरोसा करो।" मैंने उसी समय उसे अंतिम बार देखा था।'

वो चुप हो गया, प्रिज्म को निहारता रहा जैसे वो किसी चीज पर विचार कर रहा

हो। विजय उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन के ख्यालों में खो गया। उसे महसूस हुआ कि वो कभी भी उन अंतिम क्षणों के बारे में सोचना नहीं चाहता था जब उसके माता-पिता कार के उस जानलेवा सफर के लिए निकले थे। ये एक धुंधली सी याद थी और उसने उन्हें वैसा ही रहने दिया था। उसे याद करना बेहद दर्दनाक था।

अब, केएस के शब्दों को सुनकर, वो धुंधली याद बिलकुल साफ-साफ दिखने लगी। वो देख सकता था कि उसके पिता घर से तेजी से निकल रहे हैं, और उससे कुछ कह रहे हैं। उसकी मां कार में उसके पिता के साथ बैठी थी और वो निकल गए थे।

लेकिन उसे अभी भी याद नहीं आया कि वो उनके साथ क्यों नहीं गया था। उसके पिता ने जाते-जाते क्या कहा था? क्या वो विजय को पुकारकर अपने साथ जाने के लिए कह रहे थे? फिर विजय ने जवाब क्यों नहीं दिया था? वो घर में ही क्यों रह गया था? उसे याद करने में दिक्कत हो रही थी।

किसी वजह से, उसके दिमाग ने उस विशेष याद का रास्ता बंद कर दिया था। वो जितनी भी कोशिश कर ले, लेकिन उस दृश्य का यही हिस्सा वो याद नहीं कर पाता था।

'छह महीने पहले तक, मेरे पास इस चीज के पास दोबारा नहीं जाने की एक बहुत बड़ी वजह थी,' केएस दोबारा बोलने लगा था, अपने दिमाग में चल रही उथल-पुथल पर काबू पाने के बाद। 'जिस दिन तुम्हारे माता-पिता के साथ हादसा हुआ, मेरा अपहरण कर लिया गया था। मुझे यातनाएं दी गईं। किसी को ये प्रिज्म चाहिए था। बुरी तरह।' उसने अपने चेहरे पर बने घाव के निशान की तरफ इशारा किया। 'तुम इसे देख रहे हो? उन्होंने तीन दिनों तक यही किया। धीमा लेकिन दर्दनाक। लेकिन मैंने उन्हें कभी कुछ नहीं बताया। तुम्हारे पिता ने इस कलाकृति को मुझे भरोसा करके दिया था, और ये उसकी अंतिम निशानी था। मैं उसे धोखा नहीं दे सकता था। आखिरकार, उन्होंने मुझे छोड़ दिया; ये भरोसा करके कि मैं कुछ नहीं जानता था। नौ साल तक तुम्हारे पिता के साथ मेरा काम नहीं करना शायद मेरे अब तक जिंदा रहने की वजह है। लेकिन इससे मुझे ये अहसास हुआ कि ये कलाकृति जानलेवा है। मैंने इसे अब तक सुरक्षित छिपा रखा था।'

'तो फिर आप इसे अब क्यों लाए हैं? इसे मुझे क्यों दे रहे हैं?'

केएस ने ठंडी सांस ली। 'मेरा विश्वास करो, मैं बस इतना चाहता हूं कि मैं इस शापित चीज को भूल जाऊं। लेकिन ये मुझे ऐसा नहीं करने देगी। मेरे पास पिछले पंद्रह सालों में किसी भी समय के मुकाबले ज्यादा समय रहा है,' उसने कहा। 'चीजों के निरीक्षण का समय। चीजों पर गौर करने का समय। ऐसी खुदाई जहां की खोजों को नजरअंदाज किया गया या उन्हें बेकार घोषित कर दिया गया। और वैसी जगहें जिन्हें उनके खबरों में आने के तुरंत बाद बर्बाद कर दिया गया, ताकि वहां जो खोज हुई वो कभी सामने न आ सके।'

विजय को याद आया कि ग्रीस में उस जगह क्या हुआ था, जहां पिछले साल एलिस खुदाई के लिए गई थी। अगर एलिस हाथीदांत के घनाकार टुकड़े के साथ बच नहीं निकलती, तो उस मकबरे की कीमती खोज दुनिया के लिए हमेशा खो जाती। सिर्फ ऑर्डर को इसके बारे में जानकारी रहती।

'एक तरीका था,' केएस ने बात जारी रखी। 'मैंने गौर किया कि ये उन स्थलों पर लागू होता था जहां की कलाकृतियों की खोज विश्व इतिहास के बारे में, खासकर

प्राचीन काल के इतिहास के बारे में, हमारी धारणा को बदल सकती थीं। और मैंने ये सोचना शुरू कर दिया था कि क्या तुम्हारे पिता की खोज का कोई संबंध इन खनन कार्यों से था। खासकर तब जबसे मुझे प्रिज्म के बारे में पता चला।' वो अपनी उंगलियों पर उन बिंदुओं को गिन रहा था जिनका वो जिक्र कर रहा था। 'ऐसा लगता है कि कोई इन खोजों को दबाए रखना चाहता है,' उसने बोलना शुरू किया। 'कोई इस प्रिज्म के पीछे है। क्या तुम्हारे पिता को इन खोजों या प्रिज्म के बारे में काफी कुछ पता चल गया था? क्या उन्हें मार डाला गया ताकि वो हमेशा के लिए खामोश हो जाएं?'

11

स्टारबक्स, साकेत,
नई दिल्ली

‘आगे बताइए,’ विजय ने कहा। वो और ज्यादा जानना चाहता था।

‘फिर, हाल ही में दो चीजें ऐसी हुईं जिन्होंने मुझे छह महीने पहले इस प्रिज्म को बाहर निकालने पर मजबूर कर दिया। मुझे किसी ने बताया कि दिल्ली में नेशनल म्यूजियम को ब्रिटिश म्यूजियम की तरफ से असीरियाई कलाकृतियों की विशेष प्रदर्शनी लगाने के लिए एक प्रिज्म मिला है जिस पर कीलाक्षर अभिलेख हैं। दरअसल, इस प्रिज्म को बेकार माना जा रहा था क्योंकि इस पर लिखी बातों का कोई मतलब नहीं निकल रहा था। ऊपर से, मैंने एक खबर पढ़ी कि असीरियाई प्रदर्शनी के दौरान नेशनल म्यूजियम के क्यूरेटर की हत्या कर दी गई। मैंने सोचा कि क्या क्यूरेटर की हत्या किसी ऐसे शख्स ने की है जिसे म्यूजियम में दूसरे प्रिज्म की मौजूदगी का पता था। इससे मुझे ये जानने की उत्सुकता हुई कि क्या वो प्रिज्म और तुम्हारे पिता का मुझे दिया गया प्रिज्म आपस में किसी तरह से जुड़े हैं। इसका मतलब था कि जो भी इस प्रिज्म के पीछे था, उसने पता लगा लिया था कि ये कहां है। अगर ऐसा नहीं होता तो वो म्यूजियम में दूसरे प्रिज्म की तलाश में क्यों जाता?’

केएस ने उसके सामने अपने हाथ फैला दिए। ‘मैं एक साधारण आदमी हूं, विजय। और अब, मैं डरा हुआ हूं। जो कुछ भी हो रहा है, वो बड़ा है। अगर कोई इतना ताकतवर है कि वो ऐतिहासिक खोजों को बर्बाद कर रहा है या दबा रहा है, तो वो निश्चित रूप से किसी बड़ी चीज की तलाश में है। मैं नहीं जानता कि वो क्या है लेकिन इससे मुझे डर लग रहा है। और मैं नहीं जानता कि मैं क्या करूं। और, चूंकि तुम्हारे पिता अब नहीं हैं, मैंने तुमसे मिलने का फैसला किया। अगर इसकी तलाश में लगे लोग मेरे बारे में जान जाएंगे, वो देर-सवेर मुझ तक पहुंच जाएंगे। मैं ये बात मानकर चलता हूं। मैं कब तक छिपा रह सकता हूं? मैं बूढ़ा हो रहा हूं और मैं ऐसी जिंदगी से थक गया हूं। लेकिन जब वो मुझे पकड़ें तो मैं नहीं चाहता कि वो इस प्रिज्म को हासिल करें।’

‘आप इतने निश्चय के साथ कैसे कह सकते हैं कि म्यूजियम में हुई हत्या का संबंध प्रिज्म से था?’ विजय को ये बात मालूम थी क्योंकि वो म्यूजियम में था जब क्यूरेटर की हत्या हुई थी।

केएस ने फिर से इनकार में सिर हिला दिया। ‘सच पूछो तो, मुझे इसकी परवाह नहीं है। अगर ऐसा नहीं भी था, तो भी मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहता।’ उसने दरवाजे की तरफ घबराकर देखा अच्छे डील-डौल के दो नौजवान अंदर आए और उनकी तरफ देखने लगे।

विजय ने गौर किया कि वो किनकी तरफ देख रहा था। ‘घबराइए नहीं,’ उसने केएस को सांत्वना दी। ‘वो मेरे सुरक्षाकर्मी हैं। वो साइबर हब में भी थे, लेकिन हमने

उन्हें पीछे छोड़ दिया था। वो मुझे ढूंढ़ते हुए यहां आए हैं। उनके आसपास रहने से हम ज्यादा सुरक्षित रहेंगे।' वो पल भर के लिए रुका। 'आपने मुझसे मिलने के लिए छह महीने का इंतजार क्यों किया?'

वो बुजुर्ग कुछ पलों तक सोचता रहा, जैसे अपने शब्दों को तोल रहा हो। 'पहली बात, मैं देखना चाहता था कि क्या मैं दोनों प्रिज्मों के संबंध के बारे में सही था या नहीं। मैंने इस प्रिज्म की एक प्रतिकृति बनाई और इंग्लैंड में एक विशेषज्ञ के पास इसके अभिलेख भेजे। फिर, मेरे पास छह महीने पहले एक फोन आया, जिसने मुझे मजबूर किया कि मैं प्रिज्म हासिल होने के पंद्रह साल बाद तुमसे संपर्क करूं। हमारी मुलाकात के पहले मुझे तैयारी करनी थी, ताकि मैं ये सुनिश्चित कर सकूं कि किसी को इस बात की भनक ना लगे कि मैंने तुमसे संपर्क किया था। पंद्रह सालों तक, तुम उस चीज में शामिल नहीं थे जिसमें तुम्हारे पिता उलझ गए थे। मैं तुम्हें इन सब में नहीं लाना चाहता था जब तक कि मैं हमारी मुलाकात को सुरक्षित ना बना लूं। मैं जानता था कि इसमें समय लगेगा। इसलिए हमारी मुलाकात के पहले मैंने छह महीने का समय मांगा था। अगर हम फोन पर बातचीत के तुरंत बाद मिलते, तो कोई टूटी कड़ियों को जोड़ लेता और हम दोनों उसके निशाने पर हो सकते थे।' उसने अपना सिर हिलाया 'जैसा मुझे पता चला, कि छह महीने भी काफी नहीं थे। उन्होंने मुझे ढूंढ़ निकाला और साइबर हब तक पहुंच गए। अब वो जानते हैं कि हम एक-दूसरे के संपर्क में हैं।'

'तो विशेषज्ञ ने आपको प्रिज्म के अभिलेख के बारे में क्या बताया?' विजय ने उत्सुकता दिखाई।

'ओह, सॉरी, मैंने उसका जिक्र नहीं किया ना?' केएस ने अपनी लापरवाही पर अपना सिर हिलाया। उसने विजय की तरफ देखा। 'उसने मुझे बताया कि अभिलेखों का कोई मतलब नहीं निकल रहा। वो अधूरे हैं; वो पूरे वाक्य ना होकर वाक्यांश की तरह ज्यादा हैं। अगर प्रिज्म काफी पुराना ना होता तो ये बेकार होता।'

'बिलकुल वैसा ही जैसा विवरण दूसरे प्रिज्म पर है,' विजय ने अपनी राय रखी। 'शायद आप सही कह रहे थे कि दोनों प्रिज्म एक-दूसरे से जुड़े हैं।'

केएस ने हामी भरी। 'मैं जानता हूं। लेकिन मुझे ये जानने में कोई दिलचस्पी नहीं है कि मैं सही हूं या नहीं।'

उसने प्रिज्म को विजय की तरफ धकेला। 'इसे रखो। और अब जाओ। जो भी इस चीज के पीछे है, उसे पता नहीं लगना चाहिए कि मैंने इसे तुम्हें दिया है।' उसने सुरक्षाकर्मियों की तरफ देखकर सिर हिलाया। 'अच्छी बात है कि तुम्हारे साथ ये लोग हैं। तुम्हें इनकी जरूरत पड़ेगी। अब, जाओ। उन लोगों को हमारे पीछे यहां आने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।'

आधे-अधूरे मन से, विजय ने प्रिज्म को पॉकेट में रखा और उठ खड़ा हुआ। वो पीछे देखे बगैर दरवाजे की तरफ चल दिया, उसके मन में गहरी शंकाएं थीं। उसे केएस के लिए कुछ अपना सा महसूस हो रहा था। ये आदमी उसके पिता की गुजारिश के प्रति पक्का वफादार रहा था। यहां तक कि आज भी, जब वो जानता था कि शायद उसका खात्मा भी प्रताप सिंह की तरह हो सकता था, वो ये सुनिश्चित कर रहा था कि उसे दी गई जिम्मेदारी पूरी हो।

जब वो आउटलेट से बाहर निकला, दोनों आदमी भी उसके पीछे बाहर आ गए।

सीढ़ियों से नीचे एक कार उसे किले तक वापस ले जाने के लिए इंतजार कर रही होगी।

केएस विजय को जाते हुए देखता रहा और अपनी कॉफी का अंतिम घूंट लिया। ये ठंडी थी। लेकिन इससे फर्क नहीं पड़ता था। उसने वो कर लिया था जो उसे करने की जरूरत थी। विजय को जानने की जरूरत थी।

सिर्फ एक चीज उसे परेशान कर रही थी। क्या उसे विजय को पूरा सच बताना चाहिए था?

12

दो दिन बाद
इंटेलिजेंस ब्यूरो हेडक्वॉर्टर्स, नई दिल्ली

'सिर्फ दो महीने पहले हमने यही बातें की थीं,' पैटरसन गरजा, उसका चेहरा गहरा और डरावना हो गया था। 'मैं नहीं जानता कि ऐसा मैंने क्या कहा था जो तुम्हें समझ नहीं आया था।'

विजय ने स्क्रीन की तरफ निराशा के साथ देखा। 'मैंने कुछ नहीं किया,' उसने धीमे स्वर में विरोध किया। 'मेरा मतलब है, मेरी गलती क्या है?'

'टास्कफोर्स में बिना किसी को बताए किसी अजनबी से मिलने के लिए अपने मन से चले जाना; इसकी जिम्मेदारी तुम्हारे अलावा कौन ले सकता है?' पैटरसन की आवाज अब शांत थी और इसमें इस्पात सी सख्ती थी। विजय नहीं जानता था कि क्या ज्यादा बुरा था, पैटरसन का गुस्सा या ये ठंडी, मौत जैसी शांति जिसे वो देख रहा था। इमरान आज की इस मुलाकात में मौजूद नहीं था। पैटरसन विजय से ही सीधी बात करना चाहता था।

'वो मेरा निजी मामला है,' विजय ने पलटकर जवाब दिया। 'मैं अपनी निजी जिंदगी में क्या करता हूं, हर चीज टास्क फोर्स को बताने की जरूरत नहीं है।'

'निश्चित रूप से तुम्हें जरूरत नहीं है। और मैं तुम्हें ऐसा कह भी नहीं रहा हूं। लेकिन ये निजी मुलाकात नहीं थी ना? क्या इसका कोई संबंध सिकंदर के रहस्य से नहीं था?'

विजय ने पैटरसन को पहले ही बता दिया था कि उसके और केएस के बीच क्या बातचीत हुई थी और ये भी बताया था कि यही आदमी उस जर्नल का स्रोत था जिसकी मदद से पिछले साल सिकंदर का रहस्य ढूंढने में उन्हें कामयाबी मिली थी। हालांकि, उसने प्रिज्म और पूरे घटनाक्रम से अपने पिता के संबंध वाली बात छिपा ली थी।

'था,' विजय ने स्वीकार किया। 'लेकिन...'

'ऐसे मामले में टास्क फोर्स को शामिल किया जाना था,' पैटरसन ने उसकी बात काट दी। 'और उस फसाद का क्या जो तुम्हारे और उस आदमी, केएस, के वहां से भागने के बाद हुआ। उसके लिए कौन जिम्मेदार है? तुम्हारी वजह से लोग अब जान गए हैं कि तुम्हारा एक सुरक्षा चक्र है। इससे लोगों को सतर्क रहने का मौका मिल जाएगा। अब तक, हम टास्क फोर्स को लोगों की नजरों से दूर रखने में कामयाब रहे हैं। कोई भी इसके अलावा और कुछ नहीं सोच सकता था कि तुम भारतीय मूल के अमेरिकी हो, जो एक स्टार्टअप में कामयाब करियर के बाद अपनी पैतृक संपत्ति संभालने भारत लौट गया। अब ये मुखौटा हट गया है। लोग जानते हैं कि तुम्हें सुरक्षा मिली हुई है। हम ऑर्डर के मुकाबले सिर्फ इस मायने में फायदे में थे कि वो हमारे बारे में जानते नहीं थे। अब वो जान जाएंगे। मैं ये पक्के तौर पर कह सकता हूं। सक्सेना के दफ्तर में तुम्हारे जाने और

साइबर हब की घटनाओं के बाद पक्के तौर पर वो सावधान होकर चीजों पर गौर करेंगे। वो मूर्ख नहीं हैं। वो अंदाजा लगा लेंगे कि तुम किसी बड़ी चीज का हिस्सा हो। और फिर कब तक टास्क फोर्स उनकी नजरों से छिपा रहेगा?'

विजय इस बात से नफरत करता था जब पैटरसन की बातें सही होती थीं, और ऐसा लगता था कि वो ज्यादातर समय सही ही होती थीं। जब विजय केएस से मुलाकात के बाद तेजी से बाहर जा रहा था, उसके सुरक्षाकर्मी भी उसके पीछे थे और संयोग से उन लोगों से टकरा गए थे जो विजय और केएस का पीछा कर रहे थे। सुरक्षा टीम को वैसे तो खुद को गुप्त रखने के निर्देश थे, लेकिन उनके पास विजय का पीछा कर रहे लोगों से उलझने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। वहां एक झड़प हो गई थी और कुछ गोलीबारी भी हुई थी, हालांकि विजय के सुरक्षाकर्मियों ने पीछा करने वाले लोगों को भगा दिया था। उनकी कार्रवाई के बाद ही विजय और केएस वहां से भाग निकलने में कामयाब हुए थे। लेकिन इसका ये भी मतलब था कि, जो भी केएस के पीछे था, वो ना सिर्फ विजय के साथ उसके संबंध के बारे में जान गया था बल्कि ये भी जान गया था कि विजय की सुरक्षा में एक दस्ता लगा रहता है।

वो इन कड़ियों को जोड़ लेंगे और समझ जाएंगे कि विजय की इतनी कड़ी सुरक्षा के पीछे कोई ना कोई वजह होगी। ऑर्डर के दूर-दराज तक फैले सूचना तंत्र को जानने के बाद ये समझ पाना असंभव था कि ये बात उनके ध्यान में नहीं आई होगी। वो इसकी पड़ताल करेंगे। और उन्हें टास्क फोर्स की मौजूदगी का पता लगाने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। उनके पास ऑर्डर के मुकाबले जो एक फायदा था वो अब खो जाएगा।

और इसके लिए वो जवाबदेह होगा।

'ये तुम्हारे लिए आखरी चेतावनी है,' पैटरसन ने अपनी बात जारी रखी, उसकी आवाज धीमी और धमकी भरी थी। 'मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि तुम कितने उपयोगी हो, मैं इस बात की परवाह नहीं करता कि पिछले दो सालों में तुमने क्या हासिल किया है। मैं ऐसे किसी को पसंद नहीं करता जो निर्देशों को नहीं मानता और टीम के बाकी सदस्यों को खतरे में डालता है। तुम अगर ऐसी हरकत एक बार और करते हो तो तुम्हें टास्क फोर्स से बाहर कर दिया जाएगा। भले ही अमेरिका का राष्ट्रपति कहे, मैं तुम्हें अपनी टीम में नहीं रखूंगा। बात समझ में आई?'

विजय ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। वो समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे। अपनी जिंदगी में पहली बार उसने अपने मन की नहीं, बल्कि अपने जज्बातों की सुनी थी। राधा को खोने के बाद वो टूट चुका था और सोचने-समझने की उसकी क्षमता गायब हो गई थी। हालात तब और गंभीर हो गए थे जब छह महीने पहले एकाएक केएस उसकी जिंदगी में आया था, जिसने दुख और अपराधबोध के जज्बातों को झकझोर दिया था और उसके माता-पिता को खोने की यादें ताजा कर दी थीं। जिंदगी में पहली बार, उसने सच में खुद को अकेला महसूस किया था।

स्क्रीन काली हो गई और इमरान ने कमरे में प्रवेश किया।

'वो एक संगठन बनाने की कोशिश कर रहा है,' इमरान ने कुछ पलों की खामोशी के बाद विजय को सफाई दी। वो देख सकता था कि विजय परेशान है, और सिर्फ पैटरसन के साथ मुलाकात की वजह से नहीं। 'उसे अमेरिकी और भारतीय सरकारों से मंजूरी मिल गई है कि वो टास्क फोर्स को सीआईए और आईबी की तर्ज पर एक मजबूत

संगठन में बदले। हमारे पास संसाधन होंगे, हमारी सुरक्षा के लिए अपने विशेष सैनिक होंगे, जिससे हम खुफिया जानकारी मिलने पर बेहतर तरीके से काम कर सकेंगे। तुम जानते हो कि इसका मतलब क्या है, है ना? हम ऑर्डर तक जल्दी पहुंच सकते हैं,' इमरान पल भर रुका। 'मैं तुम्हारी हरकतों के पीछे की वजह समझ सकता हूं। दोनों, जब तुम सक्सेना से मिले और अब जब तुम केएस से मिले। लेकिन तुम्हें समझना होगा कि पैटरसन कहां से आता है। वो इस बात की इजाजत नहीं दे सकता कि नया संगठन जन्म लेने के पहले ही मुश्किल में पड़ जाए। अगर ऑर्डर हमारे बारे में जान जाता है, वो हमें कुचलने के लिए पूरी ताकत लगा देंगे। और पैटरसन इसे होने देने की इजाजत कभी नहीं देगा।'

'मैं जानता हूं,' विजय ने ठंडी सांस ली। 'मैं जानता हूं कि वो सही है। लेकिन मैं...मैं सीधा सोच नहीं पा रहा हूं।'

इमरान ने उसके कंधे पर अपना एक हाथ रखा। 'थोड़ा आराम कर लो, विजय,' उसने नरमी से कहा। 'तुम ऑर्डर के बारे में, राधा को ढूंढने के बारे में बहुत ज्यादा सोच रहे हो। कहीं छुट्टी पर चले जाओ। विदेश चले जाओ।'

'शायद मैं जाऊंगा,' विजय ने जवाब दिया। 'मैं लंदन जाऊंगा। शायद ब्रिटेन के ग्रामीण इलाकों को देखने। वहां वसंत का समय है और मौसम खुशनुमा होगा।' उसने इमरान की तरफ देखा। 'तुम मुझे राधा की खोज के बारे में बताते रहोगे ना?'

इमरान ने हामी भरी। 'हां, हां, मैं बताऊंगा।'

विजय ने शुक्रिया कहने के लिए अपना सिर हिलाया और कमरे से बाहर निकल गया।

इमरान विजय को थोड़ी देर तक देखता रहा। वो जानता था कि उसका दोस्त किस दौर से गुजर रहा था, और वो चिंतित था कि इससे उसके फैसले बिगड़ रहे थे। विजय सिर्फ राधा के बारे में सोच पा रहा था। वो इस बारे में चिंतित नहीं था कि अमृत कहां गया। एक बार भी उसने नहीं पूछा था कि क्या टास्क फोर्स वान क्लुएक के हेलीकॉप्टर का पता लगा पाया है। या ऑर्डर के बारे में कोई नई जानकारी मिली है या नहीं।

उसने लंबी सांस ली। पैटरसन विजय को दी गई चेतावनी को लेकर काफी गंभीर था। और वो जानता था कि विजय कभी भी अपना अंतिम मौका गंवा सकता है। इसी वजह से उसने विजय को देश से बाहर जाने और छुट्टी लेने के लिए कहा था। यही इकलौता तरीका था जिससे विजय को कम से कम थोड़े समय के लिए नुकसान से बचाया जा सकता था।

जौनगढ़ किला

विजय अपने स्टडी रूम में बैठकर पत्थर के प्रिज्म को ध्यान से देख रहा था। इतना छोटा सा सामान, फिर भी इतनी सारी मुसीबतों की जड़!

उसके विचार फिर से केएस के साथ उसकी मुलाकात की तरफ मुड़ गए। उस बातचीत में उसे अपने पिता के बारे में काफी कुछ जानने को मिला था। और, फिर भी,

ढेरों नए सवाल उभरने लगे थे। किशनगढ़ में उसके पिता ने केएस से कोई चीज क्यों छिपाई थी? उन्हें प्रिज्म कहां से मिला था? ऐसा लगता है कि उन्हें प्रिज्म की अहमियत और इसके खतरे की जानकारी थी तभी उन्होंने केएस से इसे राज रखने को कहा था।

अब वो एक बात पक्के तौर पर कह सकता था। कार की टक्कर कोई हादसा नहीं थी। उसके माता-पिता दोनों की हत्या की गई थी। और उसे बिलकुल नहीं पता था कि क्यों। बस वो ये अंदाजा लगा सकता था कि शायद उसके पिता किसी बड़ी चीज से टकरा गए थे। उसकी मां भी एएसआई में काम करती थीं, हालांकि वो फील्ड आर्कियोलॉजिस्ट नहीं थीं।

क्या उसके पिता ने अपनी खोज उसकी मां को बताई थी? क्या इसीलिए वो भी मारी गईं?

वो उठा और उसने अपने लिए ग्लास में व्हिस्की डाली और स्टडी रूम से लगी खिड़की से बाहर पहाड़ियों को निहारने लगा, जिन पर ये किला बना था।

विजय को एक और चीज परेशान कर रही थी। वो प्रिज्म और पुरातात्विक खनन कार्यों में संबंध होने के केएस के खुलासे में इतना डूब गया था कि एक अहम सवाल उसके दिमाग से ही निकल गया था।

दूसरे जर्नल में क्या था जो माइक ऐशफोर्ड ने केएस को भेजा था?

भाग 5

मई

13

ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन

विजय ब्रिटिश म्यूजियम के विशालकाय ग्रेट कोर्ट में घूम रहा था। जब इमरान ने उसे छुट्टी पर जाने का सुझाव दिया था, लंदन चुनने का फैसला एकाएक नहीं हुआ था; विजय का यहां आने के पीछे एक मकसद था।

इमरान के साथ बातचीत के दौरान उसके दिमाग में केएस के साथ मुलाकात घूम रही थी। ये बात कि ब्रिटिश म्यूजियम में ऐसा प्रिज्म था जिसके अभिलेखों का कोई मतलब नहीं निकलता था, उसके ख्यालों में थी। खासतौर पर इसलिए क्योंकि वो उसी प्रिज्म की प्रतिलिपि के समान लग रही थी जो केएस ने उसे दिया था।

विजय लंदन उसी प्रिज्म को ढूंढने के लिए आया था जिसकी चर्चा केएस ने की थी। उसके माता-पिता की मौत के रहस्य के लिए ये एक और सुराग था। और विजय इस रहस्य की तह तक जाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता था।

'आपको निश्चित रूप से खाने के लिए कुछ नहीं चाहिए?' उसकी बांह के पास से आ रही आवाज ने उसका ध्यान भंग किया।

विजय लंबे और अच्छे डील-डौल के उस आदमी की तरफ देखकर मुस्कुरा दिया जो एक मफिन और कॉफी का कप लेकर आया था। ये आदमी था हैरी ब्रिग्स, जो पहले एसएएस मोबाइल ट्रूपर रह चुका था, जो ब्रिटेन की सबसे अच्छी स्पेशल फोर्सेज यूनिट का हिस्सा है। हैरी को विजय की ब्रिटेन यात्रा के दौरान साथ रहने को कहा गया था।

हालांकि विजय ने इस बात पर जोर दिया था कि उसे सुरक्षा की जरूरत नहीं है, खासकर इसलिए कि ये एक निजी दौरा है और इसका कोई संबंध टास्क फोर्स से नहीं है, इमरान ने उसकी बात सुनने से इनकार कर दिया था। वो बस इस बात के लिए राजी हुआ था कि विजय के साथ उसकी छुट्टियों पर पूरी सुरक्षा टीम नहीं जाएगी। हालांकि उसने इस बात पर जोर दिया था कि टास्क फोर्स उसके साथ स्पेशल फोर्सेज के एक भूतपूर्व सदस्य को भेजेगी।

'सिर्फ इसलिए कि तुम भारत में नहीं रहोगे, इससे तुम सुरक्षित नहीं हो जाओगे,' इमरान ने उसको ध्यान दिलाया था। 'सच पूछो तो, किले के बाहर तुम ज्यादा असुरक्षित रहोगे। और मत भूलो कि कोई तो है जो केएस का पीछा कर रहा था और अब वो जानता है कि किसी ना किसी तरह उसका संबंध तुमसे है। वो लोग जो भी हों, वो तुम्हारे ऊपर भी नजर रख सकते हैं। तुम वहां अकेले नहीं जाओगे,' इमरान ने दृढ़ता से अपनी बात खत्म की थी।

'लेकिन मैं अकेला नहीं रहूंगा,' विजय ने विरोध करते हुए कहा था। 'कोलिन भी वहां मेरे साथ जा रहा है।'

'मेरा मतलब उससे नहीं था और तुम इस बात को जानते हो,' इमरान विजय की तरफ देखकर मुस्कुरा दिया था। 'कोई तर्क-वितर्क नहीं। तुम्हें एक अंगरक्षक मिलेगा,

बस।’

विजय को हथियार डालने पड़े थे, वो जानता था कि इमरान पीछे नहीं हटेगा। हैरी विजय से एयरपोर्ट पर मिला था और पिछले दो दिनों से उसके साथ परछाईं की तरह लगा हुआ था। पिछली रात, सरे के उस छोटे फार्म में कोलिन उनके साथ आ गया था, जहां लंदन से ट्रेन से जाने में थोड़ा ही समय लगता था।

हैरी का साथ उनके लिए बढ़िया साबित हो रहा था। वो विजय और कोलिन का हमउम्र था, मजाकिया स्वभाव का था और काफी मिलनसार था। इराक में एक जख्म खाने के बाद उसे सेना से स्वास्थ्य के आधार पर जल्दी हटा दिया गया था हालांकि वो इतना चुस्त-दुरुस्त लगता था कि ऐसा मानना मुश्किल था। छह महीने पहले, वो ब्रिटेन में टास्क फोर्स की एक छोटी टीम में शामिल हो गया था। पिछले दो दिनों के दौरान, विजय ने उसे पिछले साल के उनके अफगानिस्तान अभियान के बारे में सबकुछ बता दिया था, जिससे स्पेशल फोर्सेज के इस सैनिक की उन दिनों की यादें ताजा हो गई थीं, जब वो तालिबान से लड़ने के लिए उस देश में साल भर रहा था।

‘आखिरकार,’ हैरी मुस्कुराया और उस छोटे दरवाजे की तरफ इशारा किया जिससे होकर सीढ़ियां एक मंजिल नीचे शौचालय तक जाती थीं, और कोलिन उसमें से बाहर निकला।

‘बड़ी राहत मिली,’ कोलिन ने कहा। ‘अब मैं म्यूजियम से निपटने के लिए तैयार हूं।’

‘तुमने दोपहर के खाने के साथ जो बीयर पी थी, ये उसका नतीजा था,’ हैरी ने कहा, फिर विषय बदल दिया। ‘हमें कहां से शुरुआत करनी है?’ विजय ने हैरी को उन लोगों की यात्रा की वजह नहीं बताई थी। एसएएस का पूर्व सदस्य सोच रहा था कि वो लोग यूं ही म्यूजियम घूमने आए हैं। ‘यहां की सारी चीजें देखने के लिए आधा दिन बहुत कम है,’ उसकी प्रतिक्रिया थी जब विजय ने उसे आज की योजना बताई थी। लेकिन विजय ऐसा ही चाहता था। भले ही टास्क फोर्स का हिस्सा हो, हैरी अभी भी एक अजनबी था, और विजय अपनी निजी मंशा उसे बताने में अभी सहज नहीं था। हां, कोलिन को इस रहस्य की जानकारी थी।

‘असीरियाई सेक्शन,’ विजय ने कहा और म्यूजियम के नक्शे पर उस गैलरी की तरफ इशारा किया जहां उन्हें जाना था। ‘कमरा नंबर 6 से 10, ग्राउंड फ्लोर।’

‘एक मिनट रुको,’ कोलिन दूसरे नक्शे में झांक रहा था। ‘तीसरी मंजिल पर भी मेसोपोटामियाई गैलरी हैं। कमरा नंबर 52 से 56 तक।’

‘तो, तुम प्राचीन मध्य पूर्व में दिलचस्पी रखते हो?’ हैरी की आवाज में हैरानी थी। ‘उस इलाके के इतिहास के लिए मेरे मन में कभी दिलचस्पी नहीं जगी। वैसे, मुझे इतिहास में ही कभी दिलचस्पी नहीं रही।’ उसने कंधे उचकाए। ‘शायद इसलिए मैं यहां पहले कभी नहीं आया।’

विजय उसकी इस स्वीकारोक्ति पर मुस्कुराया और मुड़कर आगे बढ़ गया। ‘पहले ग्राउंड फ्लोर से शुरुआत करते हैं और फिर तीसरी मंजिल पर जाएंगे, ठीक है ना?’

वो कांपते कदमों से असीरियाई गैलरी की तरफ चलने लगा। पिछली बार जब कोलिन और वो एक म्यूजियम में थे, तो उसका अनुभव सुखद नहीं रहा था। एक क्यूरेटर का कत्ल हो गया था और वो लोग किसी तरह मौत के मुंह से निकल सके थे।

विजय उम्मीद कर रहा था कि इस म्यूजियम की यात्रा याद रखने लायक होगी।

14

तीन घंटे बाद
ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन

जब वो तीसरी मंजिल पर कमरा नंबर 56 से बाहर निकले, विजय ने हताशा में ठंडी सांस ली। दोनों मंजिलों की गैलरियां आश्चर्य में डालने वाली थीं। ग्राउंड फ्लोर पर स्मारक चिह्नों, दरवाजों, महल के अभिलेखों और सजावटी चित्रों का संग्रह सांसें रोकने वाला था। तीसरी मंजिल पर, अभिलेखों, मृदा-पट्टिकाओं और अष्टभुज प्रिज्मों, जैसा एक प्रिज्म विजय के पास था, का संग्रह भी उतना ही मनमोहक था।

कोलिन और विजय ने हर मृदा—पट्टिका, हर अभिलेख का निरीक्षण किया और अष्टभुज प्रिज्मों को बारीकी से देखा ताकि ये पता चल जाए कि क्या उनमें कोई ऐसा प्रिज्म है जिसकी उन्हें तलाश है।

लेकिन उन्हें वो प्रिज्म नहीं मिला।

वहां पाषाण-पट्टिकाएं और प्रिज्म तो थे जिन पर लड़ाइयों और राजाओं के विवरण खुदे थे। लेकिन कोई भी प्रिज्म ऐसा नहीं था जिसे अपूर्ण कहा जा सके या जिनके अभिलेखों का मतलब समझा ना जा सके।

'ये बताओ, क्या तुम लोग ममी देखना चाहोगे?' हैरी जानना चाहता था। मिस्र की प्राचीन कलाकृतियों वाली गैलरियां मेसोपोटामियाई गैलरियों के समानांतर ही थीं। उसकी आंखों में एक चमक थी।

'मुझे लगा था कि तुम्हें इतिहास में दिलचस्पी नहीं है, हैरी?' कोलिन ने पूछा।

'सच पूछो तो नहीं, लेकिन मैंने ऐसी चीजें पहले कभी देखी नहीं थीं,' हैरी ने थोड़ा सा सचुकाते हुए स्वीकार किया। 'मेरा मतलब है कि मैं हमेशा सोचता था कि मध्यकालीन युग में इतिहास यूरोप और ब्रिटेन का था। मैंने कभी सोचा नहीं था कि हजारों साल पहले ऐसी दिलचस्प चीजें भी हुई थीं।'

'तुम क्यों नहीं देख लेते?' विजय ने मिस्र की गैलरियों की तरफ इशारा किया। 'हम यहां तुम्हारा इंतजार करेंगे।'

'पागल तो नहीं हो गए हो? पैटरसन मुझे कच्चा चबा जाएगा अगर मैंने तुम लोगों को एक मिनट के लिए भी अकेला छोड़ा!' हैरी विजय के सुझाव पर सकते में आ गया था।

'फिर, साथ चलते हैं,' विजय ने कहा, 'चलो मिस्र वाले हिस्से में चलें।'

खुश दिख रहा हैरी ब्रिग्स अपने दोनों दोस्तों के साथ बगल वाली गैलरी में चला गया।

लेकिन विजय और कोलिन की कोई दिलचस्पी मिस्र की कलाकृतियों में नहीं थी। जब हैरी कमरे में घूम रहा था और शीशे के बक्सों में नाक सटाकर उनमें रखी कलाकृतियों को देख रहा था, दोनों दोस्तों ने इस समय का इस्तेमाल प्रिज्म के ठिकाने

पर चर्चा के लिए कर लिया।

'ये यहीं कहीं रखा होगा,' कोलिन ने कहा। 'इसे म्यूजियम में ही होना चाहिए। उन्होंने इसे भारत में तो नहीं छोड़ा होगा।'

'वो इसे वापस लाए होंगे,' विजय भी उससे सहमत था। 'लेकिन फिर हमें ये दिखा क्यों नहीं?'

'चलो किसी से पूछते हैं,' कोलिन ने सुझाव दिया। 'शायद ग्राउंड फ्लोर पर इनफॉर्मेशन डेस्क को पता हो।'

विजय ने हैरी को पुकारा और इशारा किया कि वो लोग बाहर जा रहे हैं।

'बाप रे, क्या तुमने वो कंकाल देखा था?' हैरी ने उत्साहपूर्वक पूछा। वो एक ममी की तरफ इशारा कर रहा था, जिसे उसी मुद्रा में दिखाया गया था जिसमें उसे हजारों साल पहले दफनाया गया था। ऐसी सभी प्रदर्शित वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए तापमान और आर्द्रता नियंत्रण का ध्यान रखा जाता था।

वो सीढ़ियां उतरकर ग्राउंड फ्लोर पर पहुंचे। इनफॉर्मेशन डेस्क पर, वो कतार में लगकर अपनी बारी का इंतजार करने लगे।

'मैं उन कलाकृतियों के बारे में पूछना चाहता हूं जो गैलरियों में नहीं दिखाई गई हैं,' विजय ने अपनी बारी आने पर पूछा। वो समझ नहीं पा रहा था कि डेस्क पर मौजूद महिला से वो इस विषय पर बातचीत कैसे करे। 'मैं एक विशेष कलाकृति की तलाश में हूं, जिसे दरअसल मैंने नई दिल्ली की एक प्रदर्शनी में देखा था। मुझे बताया गया था कि ये वहां ब्रिटिश म्यूजियम की तरफ से भेजा गया था। क्या आप इसे दिखाने में मेरी मदद कर सकेंगी, राशेल?' उसने महिला के ब्लाउज पर लगे पीतल के नेमप्लेट पर उसका नाम पढ़ लिया था।

'अच्छा। शायद आप जिस चीज को देखना चाहते हैं वो सिर्फ मेंबरों के लिए प्रदर्शित की जाती है,' राशेल ने जवाब दिया। 'क्या आप मेंबर हैं?'

'नहीं,' विजय ने जवाब दिया, उसका दिल बैठ गया था। अगर वो प्रिज्म तक नहीं पहुंच पाएंगे तो उसकी जांच-परख कैसे करेंगे?

'ठीक है, फिर आप मेंबर क्यों नहीं बन जाते? इसका खर्च सिर्फ 60 पाउंड है। मेंबरशिप के दूसरे और भी फायदे हैं।'

'मैं यूके में नहीं रहता,' विजय ने समझाया। 'मैं सिर्फ घूमने आया हूं। और मैं वाकई में उस कलाकृति को देखने का इच्छुक हूं। क्या और कोई तरीका नहीं है जिससे मैं उस तक पहुंच सकूं?'

'मुझे पता करने दें,' राशेल ने कहा। वो थोड़ी दूरी पर डेस्क पर रखे इंटरकॉम तक पहुंची और एक नंबर डायल किया। 'एक सज्जन हैं जो यहां विदेश से आए हैं और वो एक ऐसी कलाकृति को देखना चाहते हैं जिसे उन्होंने नई दिल्ली में देखा था। ये आम लोगों के देखने के लिए नहीं रखी है।' उसने थोड़ी देर तक दूसरी तरफ से आए जवाब को सुना। 'ओह, अच्छा,' उसने कहा। 'जरा सा रुको, मैं उनसे पूछती हूं।'

राशेल ने रिसीवर को अपने कंधे पर टिकाया और विजय की तरफ देखा। 'आपने किस प्रदर्शनी में उस कलाकृति को देखा था?'

'असीरियाई प्रदर्शनी,' विजय ने उम्मीद भरे स्वर में जवाब दिया। 'मुझे नाम तो याद नहीं है लेकिन मैं जिस चीज की तलाश में हूं वो एक अष्टभुज प्रिज्म था जिस पर

अभिलेख थे।'

'ठीक है।' राशेल ने रिसीवर को फिर से अपने कान पर रखा और वो बातें दोहरा दीं जो विजय ने कही थीं। 'अच्छा,' उसने दूसरी तरफ का जवाब सुनने के बाद कहा। 'मैं उन्हें बता दूंगी।'

वो फोन को रखते हुए विजय की तरफ मुड़ी। 'मुझे ये बताते हुए खेद हो रहा है कि आपके लिए प्रिज्म देखना संभव नहीं होगा।'

'मैं मेंबर बन जाऊंगा।' निराशा विजय पर हावी हो गई।

'मुझे खेद है कि इससे भी मदद नहीं मिलेगी। उस प्रदर्शनी में रखी गई चीजें मेंबरों को भी नहीं दिखाई जाती हैं।' राशेल ने विजय की तरफ जिज्ञासा से देखा। 'रुकिए। मैं किसी को फोन करती हूं। आप उनसे बात कर सकते हैं और पता लगा सकते हैं कि वो मदद करेंगे या नहीं। मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकती।'

विजय ने सिर हिलाया और काउंटर से पीछे हट गया। जब वो कोलिन को इस बातचीत के बारे में बता रहा था, हैरी उनके आसपास की भीड़ पर नजर रखे हुए था, उसका चेहरा भावहीन था।

'एक्सक्यूज मी!' राशेल विजय को पुकार रही थी। वो काउंटर की तरफ मुड़ा और देखा कि वहां तीन पुरुष खड़े थे जिन्होंने म्यूजियम सिक्योरिटी सर्विस की अलग सी दिखने वाली यूनिफॉर्म पहन रखी थी। 'ये लोग आपके साथ जाएंगे। कृपया इनके साथ जाएं।'

विजय ने थोड़ा आशंकित होते हुए सिर हिला दिया। एक मुलाकात के लिए म्यूजियम के तीन सुरक्षा प्रहरियों की क्या जरूरत थी? और वो लोग किससे मिलने जा रहे थे? उसकी नजरें हैरी की नजरों से मिलीं और वो तीनों सुरक्षा प्रहरियों की तरफ चल दिया।

'चलिए,' उसने उनसे कहा।

और सवाल

'तो, तुम प्रिज्म में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हो?' लंबे कद के एक आदमी ने विजय से पूछा जिसका चेहरा गुलाबी था।

विजय, कोलिन और हैरी को एक निकास द्वार से ले जाया गया था जिस पर लिखा था "सिर्फ कर्मचारियों के लिए" और वो म्यूजियम के सिक्योरिटी ऑफिस में पहुंचे थे जहां उनका अभिवादन उस लंबे आदमी ने किया था जो अब उनके सामने डेस्क पर बैठा था।

'बेन एटकिंस, सिक्योरिटी हेड,' उसने अपना परिचय दिया था। विजय ने गौर किया कि एटकिंस की नजरें हैरी पर थोड़े ज्यादा वक्त के लिए टिकी थीं। उसे आश्चर्य नहीं हुआ था। हैरी का डील-डौल एक सांड़ की तरह था। लंबाई में विजय से कई इंच ज्यादा, उसका शरीर लोहे की तरह सख्त और सुडौल मांसपेशियों से भरा था। हैरी के छोटे-छोटे बालों और असाधारण डील-डौल ने निश्चित रूप से सिक्योरिटी हेड की दिलचस्पी जगा दी होगी।

एटकिंस के कहने पर विजय ने उसे समझाया था कि वो क्या तलाश कर रहा था। सिक्योरिटी चीफ को साफ तौर पर पहले से इस मुलाकात के बारे में पता था क्योंकि ऐसा लग रहा था कि उसे पता था विजय किस कलाकृति और प्रदर्शनी का उल्लेख कर रहा है।

'मुझे खेद है कि वो कलाकृतियां देखने के लिए उपलब्ध नहीं हैं,' एटकिंस ने कहा था, जैसा राशेल ने पहले बताया था। उसके बाद उसने वो सवाल किया था जिसका जवाब देने की कोशिश विजय कर रहा था।

लेकिन वो एटकिंस को कैसे बता सकता था कि वो क्यों उस खास प्रिज्म को देखना चाहता है? वो उस दूसरे प्रिज्म के बारे में उसे नहीं बता सकता था जो उसके कब्जे में था। आखिरकार, ये एक प्राचीन कलाकृति थी। वो नहीं जानता था कि उसके पिता को वो कैसे मिली थी, लेकिन कानूनी खरीद के सुबूत के बिना, ऐसी किसी कलाकृति को अपने पास रखना जुर्म था।

'वो पहेली की तरह था,' विजय ने कहा, वो ऐसे शब्द ढूंढ़ रहा था जिनकी मदद से वो अपना असली मकसद छिपाए रख सके और किसी को संदेह भी ना हो। 'प्रिज्म का विवरण रहस्यमय लग रहा था—एक असीरियाई प्रिज्म जिस पर अधूरे अभिलेख थे; जिन्हें समझा नहीं जा सकता था। मेरी गहरी दिलचस्पी इतिहास में है और मैं जानता हूं कि असीरियाई लोग अपनी उपलब्धियों को मृदा-पट्टिकाओं और प्रिज्मों पर उकेरते थे जैसा आपने यहां प्रदर्शित कर रखा है। मैं उसे देखने के लिए बेहद उत्सुक था और उसे थोड़ा करीब से देखना चाहता था। बस यही।' वो सोच रहा था कि क्या उसने अपने जवाब से सिक्योरिटी हेड को संतुष्ट कर दिया है।

एटकिंस ने थोड़ी देर तक अपनी ठोड़ी सहलाई जैसे वो विजय के जवाब पर

विचार कर रहा हो। फिर, वो आगे की ओर झुका। 'तुम देखने में सीधे-सादे लगते हो,' उसने कहा, 'लेकिन मैं नहीं जानता कि तुम अपने साथ एक पूर्व सैनिक को रखकर क्या कर रहे हो।' उसने हैरी की तरफ देखा। 'मैं खुद भी एसएएस से हूं और किसी भी दूसरे एसएएस के सदस्य को देखकर पहचान जाता हूं।'

फिर वो विजय की तरफ मुड़ा। 'मुझे बताया गया कि तुम असीरियाई और मेसोपोटामियाई गैलरियों में गए थे। मैं नहीं जानता कि तुम किसी और प्रदर्शनी में गए थे या नहीं, और ये पता लगाने के लिए मेरे पास सीसीटीवी फिल्म देखने का ना तो वक्त है और ना ही इच्छा। मैं अपने मन की सुनता हूं, और, तुम्हारी खुशकिस्मती है कि मेरा मन कह रहा है कि तुम्हारे इरादे नेक हैं। लेकिन मुझे ये भी मानना पड़ेगा कि मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा।'

एटकिंस पीछे हटकर बैठ गया और विजय को घूरता रहा। 'शायद मुझे तुम्हें वो वजह बतानी चाहिए जिसके बाद हमें इन कलाकृतियों को प्रदर्शित नहीं करने का फैसला करना पड़ा है। जब ये सभी कलाकृतियां पिछले साल म्यूजियम वापस लाई जा रही थीं, उन्हें लूटने की एक कोशिश हुई थी।' उसने उन तीन व्यक्तियों की तरफ देखा जो विजय को उस ऑफिस में साथ लेकर आए थे। 'हमारी टीम बहुत अच्छी है,' उसने गर्व के साथ कहा, 'और हम उस लूटपाट को रोकने में कामयाब रहे। कोई सामान छुआ तक नहीं जा सका। लेकिन मैंने दो आदमियों को खो दिया। दो अच्छे आदमियों को।' उसने अपनी बात पर जोर देने के लिए अपनी तर्जनी उंगली को मेज पर ठोका। 'जांच अभी भी चल रही है लेकिन कोई सुराग नहीं मिल सका है। लुटेरे अंधेरे में बिना कोई सुबूत छोड़े गायब हो गए। तब से, प्रदर्शित की जा रही वो चीजें ताले में बंद हैं। और अब तुम उन्हें देखने की इच्छा जताते हुए आए हो।'

विजय उम्मीद कर रहा था कि इस खबर पर अपना आश्चर्य छिपाए रखने में कामयाब रहा हो जो उसे अभी-अभी मिली थी। केएस की बात प्रिज्म के बारे में सही थी भले ही वो क्यूरेटर की मौत के बारे में गलत रहा हो। किसी ने कड़ियों को जोड़ लिया था और पता लगा लिया था कि नेशनल म्यूजियम का प्रिज्म हासिल करने लायक है।

लेकिन कौन हैं वो? और वो दोनों प्रिज्म को क्यों हासिल करना चाहते हैं? इन प्रिज्म में क्या रहस्य छिपा है? और इनका उसके माता-पिता की मौत से क्या संबंध है?

ढेरों सवाल थे। विजय समझ गया कि यहां से अब बात आगे नहीं बढ़ेगी।

'मुझे खेद है कि मैंने आपका समय बर्बाद किया,' उसके लहजे में पछतावा था। 'मैं बस इतना कह सकता हूं कि मुझे लूट की इस कोशिश की जानकारी नहीं थी। लेकिन समय देने के लिए धन्यवाद।'

एटकिंस ने सिर हिलाकर हामी भरी और विजय, कोलिन और हैरी कमरे से बाहर निकल आए।

जब वो चले गए, उसने अपनी भौंहें चढ़ाईं। वैसे तो उसका मन कह रहा था कि विजय के इरादे नेक हैं, वो एक खतरे का संकेत भी दे रहा था।

कुछ तो गड़बड़ था। लेकिन क्या था वो?

उसे क्या मालूम था कि बहुत जल्दी उसे ये पता चलने वाला है।

भाग 6

मई

16

म्यूजियम के बाहर

हैरी ने ब्रिटिश म्यूजियम के बाहर के खुले इलाके का जायजा लिया जब तीनों सीढ़ियों से उतर रहे थे। जब वो सिक्योरिटी ऑफिस से निकलकर ग्रेट कोर्ट पहुंचे, हैरी ने बाकी दोनों को ये खबर दी।

'हम पर यहां निगरानी रखी जा रही है,' उसने नरम स्वर में कहा। 'मैं उन्हें तब से देख रहा हूं जब से हम असीरियाई गैलरियों से निकले और तीसरी मंजिल पर गए। यही वजह है कि मैंने मिस्र की गैलरियों को देखने की इच्छा जताई थी। मैं देखना चाहता था कि क्या वो हमारा पीछा वहां भी करते हैं। और उन्होंने किया। मैं नहीं जानता कि वो कौन हैं। अपने आसपास मत देखना। उन्हें पता नहीं लगना चाहिए कि हमें समझ आ गया है कि वो हमारा पीछा कर रहे हैं। लेकिन यहां से जल्दी से निकलो। हमें उनसे पीछा छुड़ाना है।'

बिना एक शब्द कहे, विजय और कोलिन ने अपनी रफ्तार बढ़ा दी जब वो बिल्डिंग से बाहर निकल रहे थे।

'बस तेज चलते रहो,' हैरी ने उन्हें सलाह दी। 'ऐसी हरकत मत करना कि जैसे तुम उनसे बचने की कोशिश कर रहे हो। ऐसा दिखाओ कि तुम्हें एक ट्रेन पकड़नी है।'

'तुम उनसे बचोगे कैसे?' विजय ने पूछा जब वो म्यूजियम के ऊंचे और काले दरवाजों की तरफ जा रहे थे।

'ट्यूब,' हैरी ने जवाब दिया और आगे कुछ समझाने की कोशिश नहीं की।

ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट, लंदन

'अपने ऑइस्टर कार्ड तैयार रखो,' हैरी ने कहा और तीनों आदमी टॉटेनहैम कोर्ट रोड स्टेशन में चल दिए, जो ब्रिटिश म्यूजियम का सबसे नजदीकी अंडरग्राउंड स्टेशन था।

उन्होंने अपने कार्ड स्वाइप किए और घूमने वाले दरवाजे को पार किया, हैरी ने रास्ते से ही लंदन का अंडरग्राउंड नक्शा हासिल कर लिया था।

'इस तरफ,' हैरी ने सीढ़ियों की तरफ इशारा किया जो दक्षिण की तरफ जाने वाली नॉर्दर्न लाइन की ओर जाती थीं। 'हम लीसेस्टर स्क्वेयर जा रहे हैं।'

बाकियों ने उससे कोई सवाल नहीं किया और चुपचाप सीढ़ियां उतरने लगे।

'क्या वो अभी भी हमारे पीछे हैं?' विजय ने पूछा।

हैरी ने हामी भरी। 'वो मशीन से अपनी टिकटें निकाल रहे थे जब हम घूमने वाले दरवाजे को पार कर रहे थे...वो इस बात के लिए तैयार नहीं थे कि हम ट्यूब लेंगे। शायद वो कार में हमारा पीछा करते। हमने अपने लिए थोड़ा समय निकाल लिया है।

मैं जानता था कि वो घूमने वाले दरवाजे को छलांग लगाकर पार करने की कोशिश नहीं करेंगे। ऐसा नहीं है कि ये उनके लिए सिर्फ निगरानी रखने का मिशन है। कुछ साल पहले हुई गोलीबारी की घटना के बाद, ऐसा करना जोखिम भरा होगा और इससे काफी लोगों का ध्यान भी उनकी तरफ जाएगा।'

उन्हें स्टेशन पर ट्रेन के आने के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। इस वक्त ट्रेन के सभी डिब्बे तुलनात्मक रूप से खाली थे। भीड़ का वक्त अभी तक शुरू नहीं हुआ था।

जब वो ट्रेन में चढ़ गए, जल्दी ही डिब्बों के दरवाजे बंद हो गए और ट्रेन चलने लगी।

विजय और कोलिन हैरी की तरफ मुड़े, उनके होंठों पर एक सवाल था। उन्हें पूछने की जरूरत नहीं पड़ी थी।

'वो ट्रेन में चढ़ गए हैं,' हैरी ने उन्हें चुपचाप बता दिया था। 'हमसे दो डिब्बे पीछे। वो जल्दी ही हमारे डिब्बे में आ जाएंगे। हम अगले स्टेशन पर उतर रहे हैं।'

पहली बार विजय हैरी को काम करता हुआ देख रहा था और वो उससे प्रभावित था। वो सोच रहा था कि हैरी ने कब उनका पीछा कर रहे लोगों को देख लिया था क्योंकि उसने कभी भी पीछे मुड़कर देखने की कोशिश नहीं की थी। फिर भी, ऐसा लगता था कि वो उनके हर कदम को जानता था। ये गजब का आदमी है। हैरी ब्रिग्स में उसका भरोसा मजबूत हो गया था और उसके प्रति इज्जत और बढ़ गई थी।

विजय बस ये उम्मीद कर रहा था कि उन्हें हैरी की दिलेरी और कौशल की परीक्षा किसी ज्यादा खतरनाक परिस्थिति में ना लेनी पड़े।

ट्रेन लीसेस्टर स्क्वेयर स्टेशन पर आकर रुकी। वो तेजी से उतरे, वो एक-दूसरे के करीब ही थे।

'पश्चिम की तरफ जाने वाली पिकैडिली लाइन', हैरी ने उन्हें निर्देश दिया जब वो प्लेटफॉर्म को जोड़ने वाले रास्ते पर चल रहे थे।

विजय ने हैरी की योजना का अंदाज लगा लिया था। जल्दी ही भीड़ का वक्त शुरू हो जाएगा। अगर वो ट्रेन लाइनें बदलते रहेंगे, उनका पीछा करने वाले लोग अनुमान लगाते रहेंगे, और उन्हें उनसे थोड़ी दूरी बनाने में मदद मिल जाएगी। और, एक बार जब भीड़ का वक्त शुरू हो जाएगा, उनके लिए खुद को उस भीड़-भाड़ में छिपा लेना आसान हो जाएगा, जो ट्रेन में चढ़ेगी और स्टेशन से बाहर निकलेगी। अपना पीछा कर रहे लोगों से बचने के लिए उनकी यही इकलौती उम्मीद थी। टैक्सी लेने या बस पर चढ़ने से उनका पीछा करने वाले लोगों का काम आसान हो जाता।

वो ट्रेन में चढ़ गए। उनकी मंजिल अगला स्टेशन था। पिकैडिली सर्कस। लेकिन वो इस स्टेशन पर ट्यूब से बाहर नहीं निकलेंगे। भले ही पिकैडिली की रौनक उन्हें ऊपर दिख रही थी, वो ट्रेन बदलने का अपना खेल जारी रखने वाले थे।

पिकैडिली सर्कस से, बेकरलू लाइन और फिर वहां से ऑक्सफोर्ड सर्कस। फिर, सेंट्रल लाइन पर बॉन्ड स्ट्रीट की तरफ। वहां से, उन्होंने बेकर स्ट्रीट से उत्तर दिशा की तरफ जाने वाली जुबिली लाइन ली। बेकर स्ट्रीट पर, एजवेयर रोड पर जाने के लिए हैमरस्मिथ और सिटी लाइन थी। विजय को याद आया कि पिछली बार वो एजवेयर रोड पर लेबनानी रेस्टोरेंट में था, जो लंदन में छोटा सा मध्य पूर्व था।

पूरी यात्रा के दौरान, हैरी के चेहरे पर गंभीरता थी। उसके हाव-भाव हर चीज

बता रहे थे। लगातार ट्रेनें बदलने, लाइनों के बीच चलते रहने के बावजूद वो अभी तक पीछा करने वाले लोगों से बच नहीं सके थे। साफ तौर पर, उनका पीछा कर रहे लोग हैरी की योजना को समझ गए थे और दृढ़ता के साथ उनके पीछे लगे हुए थे।

राहत की बात बस इतनी थी कि पीछा करने वाले लोगों ने उनके पास आने की कोशिश नहीं की थी। कम से कम अभी, वो बस पीछा करके संतुष्ट थे।

एजवेयर रोड पर, भीड़ बढ़ना शुरू हो गई थी। वो डिस्ट्रिक्ट लाइन की तरफ चल दिए। एक ट्रेन इंतजार कर रही थी।

उन्होंने सूचना पट्ट की तरफ देखा। उनकी किस्मत साथ दे रही थी। ट्रेन बस खुलने वाली थी।

‘अब,’ हैरी ने नरम स्वर में कहा, ‘हम तेज चलेंगे। भीड़ में से अपना रास्ता बनाओ।’

उसकी नकल करते हुए, बाकी दोनों भी दूसरे यात्रियों के बीच से कोहनियों की मदद से, और उन्हें मिल रही झिड़कियों और गुस्से भरी निगाहों की परवाह ना करते हुए, अपना रास्ता बनाने लगे। विजय को नहीं पता था कि ये हैरी की सांड़ की तरह के डील-डौल का कमाल था या उनकी किस्मत थी, लेकिन वो ट्रेन में उस समय पहुंचने में कामयाब हो गए थे जब उसके दरवाजे बंद हो रहे थे।

जब वो दरवाजों से अंदर गए, विजय ने अपना पीछा कर रहे लोगों को पहली बार देखा। पांच कॉकेशियन शख्स, भीड़ में से उसी तरह अपना रास्ता बना रहे थे जैसा उन तीनों ने अभी किया था।

लेकिन उन्हें देर हो चुकी थी।

दरवाजे बंद थे और ट्रेन रफ्तार पकड़ते हुए स्टेशन से दूर जा रही थी।

विजय ने राहत की सांस ली। वो कामयाब रहे थे।

17

ऑर्कले फार्म, सरे

'तुम लोगों को मुझे सारी बातें बतानी पड़ेंगी।' हैरी उस खलिहान की मचान पर रखे एक सोफे पर अपनी बांहें मोड़कर बैठा था, जहां वो लोग ठहरे हुए थे। विजय ने सरे के ग्रामीण इलाके में एक फार्महाउस का पता लगाया था, जिसमें एक खलिहान को बदलकर थोड़े दिनों तक ठहरने की व्यवस्था की गई थी। इसमें तीन बेडरूम थे जिनमें बाथरूम जुड़े थे और पहले मचान का काम करने वाले इलाके को छोटे लिविंग रूम की शक्ल दे दी गई थी।

एजवेयर रोड से, वो वेस्टमिंस्टर तक गए थे, जहां उन्होंने जुबली लाइन पर वॉटरलू स्टेशन की ट्रेन पकड़ी थी। वॉटरलू पर, उन्होंने जो ट्रेन पकड़ी थी उसने उन्हें उस रेलवे स्टेशन पर छोड़ा था जहां से, जंगलों के रास्ते से होकर, तीन मील की दूरी तय करके फार्म तक पहुंचा जा सकता था।

जैसे ही वो लोग यहां पहुंचे थे, हैरी ने कहा था कि वो उन दोनों से बात करना चाहता है और फिर वो लोग मचान की तरफ आ गए थे और अभी यहीं बैठे हुए थे।

'मुझे बताया गया था कि तुम छुट्टियों पर हो,' हैरी ने अपनी बात आगे बढ़ाई थी, वो विजय को संबोधित कर रहा था, 'जब मुझे तुम्हारे साथ लगाया गया था। तो फिर आज हम म्यूजियम में क्या कर रहे थे? तुम काम पर नहीं हो—कम से कम मुझे यही बताया गया था।' उसने दोनों की तरफ बारी-बारी से देखा। 'इसलिए मुझे जानने की जरूरत है कि तुम क्या कर रहे हो। मुझे बताओ।'

विजय ने पल भर के लिए दूर देखा, फिर हैरी की आंखों में झांकने लगा। 'मुझे खेद है,' उसने कहा। 'ये व्यक्तिगत मामला है। मैं इसे किसी को बताने में सहज नहीं हूं।'

हैरी ने अपनी बांहें खोल दीं। 'हमारा पीछा कर रहे लोग पेशेवर थे। वो अपने काम में बहुत अच्छे थे। कई बार, मैंने उनसे पीछा छुड़ाया जब भीड़ नहीं थी। उन्होंने हमारा अंदाजा खूबसूरती से लगा लिया। और इससे मुझे घबराहट हुई। मैं नहीं जानता कि क्यों प्रोफेशनल लोगों का एक झुंड तुम्हारा पीछा कर रहा है लेकिन देर-सवेर वो तुम्हारा पता लगा लेंगे। मुझे जानने की जरूरत है कि यहां क्या हो रहा है। अगर तुम खतरे में हो, मुझे इसकी वजह जानना जरूरी है। सेना में, हम एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं। हम एक-दूसरे पर पूरा भरोसा करते हैं। इसके अलावा काम करने का मुझे और कोई तरीका नहीं आता। और हम इसी तरीके से यहां भी काम करेंगे अगर तुम चाहते हो कि मैं यहां रहूं।'

कमरे में खामोशी छा गई।

विजय ने कोलिन की तरफ देखा। वो दोनों हैरी को पसंद करते थे। और उसे टास्क फोर्स में रखने के पहले उसकी पूरी जांच-पड़ताल की गई थी। कोलिन ने कंधे उचका दिए।

विजय ने एक गहरी सांस ली। 'ठीक है,' उसने कहा। 'तुम सही कह रहे हो। तुम्हें जानने की जरूरत है।'

उसने लंदन की उसकी यात्रा की पृष्ठभूमि बतानी शुरू की। उसके माता-पिता...उनका जानलेवा कार हादसा...पिछले साल उसके पास आई केएस की फोन कॉल और फिर उससे मुलाकात...वो प्रिज्म जो केएस ने उसे दिया था और ब्रिटिश म्यूजियम में दूसरे प्रिज्म की जानकारी।

जब उसने अपनी बात खत्म कर ली, हैरी ने गंभीरता से सिर हिलाया। 'अच्छा। मैं समझ सकता हूं कि तुम क्या कर रहे हो और क्यों। लेकिन इसका सारांश ये है: तुम ऐसा करके मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ सकते हो। मैं नहीं जानता कि एक प्रिज्म का इससे क्या लेना-देना लेकिन तुम्हारा पीछा आज क्यों किया जा रहा था? तुम्हें पता है कि मुझे इसकी रिपोर्ट देनी पड़ेगी।'

विजय ने फिर से गहरी सांस ली। 'हां, हैरी, मैं जानता हूं। खैर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हमारे सामने एक दीवार आ गई है। हमारे पास म्यूजियम में रखे प्रिज्म तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं है। मैं हार मान रहा हूं। मैं कल भारत लौटने के लिए जल्दी से जल्दी उड़ान का पता करने जा रहा हूं।' उसने कोलिन की तरफ देखा। 'और बेहतर होगा कि तुम भी ऐसा ही करो। खेल खत्म हो चुका है। इससे ज्यादा हम कुछ नहीं कर सकते।'

उसके शब्द उसके सच्चे जज्बातों को झुठला रहे थे। वो लोग इससे ज्यादा कर सकते थे। उसके पास अंतिम विकल्प था जिसका इस्तेमाल वो कर सकता था। लेकिन इस समय वो नामुमकिन था। वो ये तक नहीं जानता था कि शुरुआत कहां से करे। वो इतना जानता था कि आने वाले महीनों में वो समय आएगा जब वो इस विकल्प का इस्तेमाल कर पाएगा। और वो करेगा।

वो अभी के लिए हार मान रहा था। हमेशा के लिए नहीं।

जारी है तलाश

फ़ोन कॉल कट गई। विजय ने फ़ोन नीचे रखा और सोचने लगा। कौन था फ़ोन करने वाला रहस्यमय शख़्स? वो तुरंत मिलना चाहता था। फिर छह महीने का इंतज़ार क्यों? उसने जो जवाब दिया, वो समझ से बाहर था। उसे क्या तैयारियां करनी होंगी? और जब उससे मुलाक़ात होगी तो वो विजय के सामने क्या खुलासा करेगा? इतने सारे प्रश्न थे जो अभी तक अनुत्तरित थे।

आज से ठीक छह महीने बाद इस पहेली की परतें खुलेंगी। उसे इंतज़ार करना होगा।

कौन है ये रहस्यमय शख़्स जिसने विजय के कज़ाख़स्तान से लौटने के बाद उसे फ़ोन किया था, और वादा किया था कि छह महीने बाद वो एक राज़ का खुलासा करेगा?

गुड़गांव के स्टारबक्स में आख़िर क्या होता है जब विजय फ़ोन करने वाले उस रहस्यमय शख़्स से मिलता है?

वो कौन सा राज़ है जो विजय को एक नए रहस्य से रू-ब-रू कराएगा और जिसका खुलासा होगा साल 2016 में?

ये सब आपके लिए लेकर आएगा *एक रहस्य का खुलासा!*

westlandbooks.in

यात्रा

कवर डिज़ाइन-आनंद प्रकाश

ई-बुक के रूप में भी उपलब्ध